ठाँहि-पठाँहि

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

ठाँहि — पठाँहि

*

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

*

नवरत्न गोष्ठी
आदित्य सदन, मिश्रटोला
दरभंगा

Scanned by CamScanner

प्रकाशन वर्ष : 2001

प्रथम संस्करण : 500

प्राप्ति स्थान :

आदित्य सदन,
मिश्र टोला, दरभंगा
पिन - 846004

शोभन संस्करण : 60

सामान्य : 50

अक्षर संयोजन :

प्रभा कम्प्यूटर्स
टैगोर टाउन, इलाहाबाद
फोन : (0532) 467213

मुद्रक :

एकेडमी प्रेस
दारागंज, इलाहाबाद - 211006
फोन : (0532) 500970

जनिक आशीर्वाद हमर प्रतिभा-लताक हेतु मचान भेल
बीसम शताब्दीक शीर्षस्थ रचनाकार **महाकवि सीताराम झाक** स्मृतिकेँ
समर्पित–

जनिक साधनाबलेँ मैथिली पौलनि नव आलोक,
भेटि सकत पुनि हुनका सन के जगमे दोसर लोक।
करू मातृभाषामे रचना पाबि गुरुक आदेश,
आन्दोलित कय देल कवित्वक बलसँ मिथिला देश।
जनिक काव्य उपवनसँ लय कविता-कुसुमक मकरन्द,
जन-मन-मधुप पीबि कयने अछि गुंजित घुमि स्वच्छन्द।
भाषा जनिकर दासी, काशीवासी सीताराम,
नहि अवतरितथि, होइत मैथिली 'जयजय सीताराम'।
जे नहि ताकथि शब्द, शब्दसब अपने छलनि तकैत,
जनिक कृपा बिनु ओ जन-कण्ठक भूषण बनि न सकैत।
काया अतिशय क्षीण ताहिमे ऊर्जा परम प्रचण्ड,
प्रतिपक्षीक तर्ककेँ करइत छलजे खण्ड-पखण्ड।
धाङल ज्योतिषशास्त्र, मथल पुनि काव्य शास्त्र सम्पूर्ण,
केहनो कठिन समस्या आयल, कयलनि चूर्ण-विचूर्ण।
बार्द्धक्योमे युवक जकाँ करबाक हेतु संघर्ष–
प्रस्तुत छला रहैत मातृभाषाहित सतत सहर्ष।
जन्म लेल चौगमा, मुदा यश पसरल गामेगाम,
आइ मैथिली जीवित छथि से थिक तकरे परिणाम।
जखन जतय देखल, अन्तरमे सुदृढ़आत्म-विश्वास,
हृदय विशाल तेहन, उपमा भय सकइत अछि आकाश।
शून्य भेल अछि काशी जगमग भेल आब कैलास,
कविवर जाय-जतय कयलनि अछि नूतन अपन निवास।
पाबि कोरमे जनिका, मिथिला माता छली सनाथ,
तनिके स्मृतिमे कोटिबेर कवि अमर झुकाबथि माथ।

६-६-७६

तथा

जनिक रचना सृष्टि हमर कविकेँ नव दृष्टि देलक
जनिक प्रभावेँ मैथिलीक विपक्षीओ नतमस्तक भेल
ताहि विराट व्यक्तित्व सम्पन्न **कविवर वैद्यनाथमिश्र**

'यात्री' (नागार्जुन)केँ

साशीर्नमन–

वयसेँ ज्येष्ठ, कनिष्ठ मुदा सम्बन्धेँ जे छथि,
हमरा हेतु दुआरि दुनू टा सहजहि छेकथि।
सभक छलाह प्रणम्य, कोना आशिष दऽसकितहुँ,
रोम रोम गुन भरल, कतय पुनि अवगुन तकितहुँ।
नृत्यरता वाग्देवी जनिकर कलम नोंक पर,
सुधा-कलश ओंघड़ाय देथि जे आबि झोंक पर।
शब्द खराजल गेल जनिक सहवास पाबि कय,
ठाढ़ि सतत कलजोड़ि व्यञ्जना स्वयं आबिकय।
छलकि उठै छल नव रस जनिकर बात बात मे,
कीर्तिक सौरभ 'नग्न गाछ' हुक पात पात मे।
लतरल-चतरल मैथिलीक आङन जे मेघा,
संस्कृत हिन्दी धन्य पाबि ई प्रतिभा त्रेघा।
वैद्यनाथ, ठक्कन, नागार्जुन नाम अनेको,
चकित मुदित कयदेथि हँसथि मुसकाथि कनेको।
देखल मिथिला 'तापसीक अचपल भृकुटीमे',
'पारोकेँ पहुँचौलनि 'नवतुरिया'क कुटीमे।
'बलचनमा' बनि बालचन्द्र व्योमक तल चमकल,
मैथिलीक भरि चास फूटिंचित्रा'मे गमकल।
यात्रीए रहलाह बनल जीवन यात्रामे
अँटि न सकत व्यक्तित्व कतहु कोनहु मात्रामे।
कयल भाल पर मातृभूमि माँटिक जे चन्दन
तनिके स्मृतिकेँ करथि अमर कवि शतशत वन्दन।

●

कहबाक अछि जे.......

आरम्भकालमे गद्य, पद्य, चम्पू, नाटक, आख्यायिका, गीत, मुक्तक यावन्तो विधा काव्य मानल जाइत छल। कहिओ नाटकक रमणीयता प्रतिपादित करबाक हेतु कहल गेल–'काव्येषु नाटकं रम्यम्'। कविक क्षमताक कसौटी कहल गेल–गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति। परन्तु कालान्तरमे छन्दोबद्ध रचनाकेँ काव्य आ तकर रचयिता केँ कवि कहल जाय लागल। कोनो विधाक लेखकगणकेँ विधाक संग'कार' शब्द जोड़ि यथा – कथाकार निबन्धकार नाटककार उपन्यासकार आदि शब्देँ सम्बोधित कयल जाय लगलनि।

जखन कविताक हेतु छन्दक बन्धनकेँ तोड़ि देल गेल तखनसँ गेय पदक रचयिताकेँ गीतकार मानल जा रहल छनि, कवि नहि। हमर छोट बुद्धिमे कवितामे लयात्मकता तँ रहिते छैक, ओकरा ताल बद्धकऽ वाद्ययन्त्रक सहयोग लऽ गाओल गेल तँ गीत, सामान्य रूपेँ पाठ कयल गेल तँ कविता। तेँ गीतकार कविसँ भिन्न होइत छथि ई हमरा बुद्धिमे नहि अँटैत अछि। यदि एकरे मानि लेल जाय तखन तँ महाकवि विद्यापति, गोविन्द दास, महात्मा सूरदास, मीरा, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ प्रभृति रससिद्ध कविलोकनि अपांक्तेय भऽ जयताह।

परिवेश, परिदृश्य, परिस्थिति आदिक बदलब तँ स्वाभाविके थीक, परन्तु युग-युगसँ मान्यता प्राप्त कविताक परिभाषाकेँ बदलि, दराधक माथ हाथ देनिहार लोकनि कविक पाँतीमे घोंसिअयबाक जी तोड़ प्रयासमे जहियासँ लगलाह अछि, तहियासँ सम्प्रेषणक घोर समस्या उत्पन्न भऽ गेल अछि। यद्यपि पहिने कविकर्म सबसँ कठिन मानल जाइत छल, ई नव परिभाषा एकरा सबसँ सुकर बना देलक अछि, परन्तु जहिया ने कागत छल ने छापा, आ ताहि दिनुक कविलोकनिक कविता अनेक शताब्दीकेँ बितलाक बादो जनकण्ठसँ गुंजायमान होइत रहैत अछि आहि नव परिभाषाक अनुसार लिखल कविता कविक अपनो कण्ठमे वास करवा लै उद्यत नहि अछि। सम्प्रेषणक समस्याक मूलमे कविक अक्षमता अथवा पाठक ओ श्रोताक अयोग्यता अछि, हम एहि विवादमे नहि पड़ि, एतबे कहब जे लयात्मकता, जे गद्यसँ पद्य केँ फराक करैत अछि, जाहिमे नहि छैक, तकरा ने कविता मानलहुँ अछि ने ककरो अनुरोधेँ मानब। तेँ ओझाक लेखें गाम बताह वा गामक लेखेँ ओझे वताह' एकर निर्णय काल करत। एखन तँ 'अहोरूपमहोध्वनिः' भइए रहल अछि।

वस्तुतः हमरालोकनि परबुद्धी भऽ गेलहुँ अछि। नकल करबाक प्रवृत्तिएटा नहि भऽ गेल अछि, अपितु ताहिसँ गर्व बोध होइत अछि। पाश्चात्य विद्वानक समक्ष भारतीय महानसँ महान चिन्तक तथा पाश्चात्य सिद्धान्तक समक्ष भारतीय ठोस सँ ठोस सिद्धान्तकेँ तुच्छ मानि बैसल छी। अन्यथा काव्यक प्रसंग भरतसँ आरम्भ कऽ

पण्डितराज जगन्नाथ धरि जतेक गम्भीर चिन्तन मनन ओ सूक्ष्म विवेचन-विश्लेषण कयने छथि प्रायः कोनो देशक कोनो भाषामे नहि भेल होयत। परन्तु हमरा सभक मन मे जे एक हीनताक ग्रन्थि पड़ि गेल अछि से साधारण नहि, वज्रगीरह भऽ गेल अछि, ने जानि ई गीरह फुजिओ सकत वा नहि।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्तिक बाद एक एहने साहित्यकार केँ साक्षात्कारमे पूछल गेलनि जे प. सुरेन्द्र झा 'सुमन' आ अमरजीक विषयमे अपन धारणा कहू। उत्तर देलथिन – ओ सब पुनरुत्थानवादी छथि, हम प्रगतिशील परिवर्तन कामी छी।

साहित्येक क्षेत्रमे एहन स्थिति अछि से नहि, साहित्य संगीत कला सब क्षेत्रमे एहन परिवर्त्तन कामीक झुण्ड अपन घड़ारी सँ उजड़ि ओतय बसय चाहि रहल अछि जतय पुरिवा बसात नहि लागि सकय। जेना संगीतेक क्षेत्र पर दृष्टि देल जाय। चलचित्रक प्रभावसँ गीतक भासमे रँग-बिरंग नव-नव प्रयोग आरम्भ भेलैक आ तकर लोक प्रियता एतेक बढ़लैक जे मैथिली एहि बिहाड़िमे कतहु उड़िया ने जाय एही भय-भावनासँ कविचूड़ामणि मधुप ओही नव भास पर सहस्त्राधिक गीत लिखि समाजकेँ परसि देलनि। मुदा ओ बिहाड़ि बिड़रोक रूप धारण करैत गेल आ आब पॉप म्यूजिक, फास्ट सौंग्स' आदि नामसँ संगीतकेँ चीत्कारमे परिवर्त्तित कऽ देलक अछि। सद्यः प्रीतिकरो रागः गेल चूल्हि मे। हमर वैयक्तिक रुचि तँ एहन अछि जे एहन गीतक अपेक्षा सासुर जाइत काल बेटीक कानब बेसी कर्णप्रिय बुझाइत अछि। अस्तु।

हमर जन्म जाहि समयमे भेल तहिया मैथिलीक अस्तित्व-रक्षार्थ संघर्ष चलि रहल छल। जखन चेतना भेल ताबत एकरा स्वतन्त्र भाषाक मान्यता भेटि चुकल छलैक। प्रयोजन छलैक एकरा सबल सुपुष्ट बनयबाक तथा जन-जनकेँ मातृभाषाक महत्त्व सँ अवगत करयबाक। हम पढ़लहुँ संस्कृत व्याकरण सेहो फक्किका मर्म मंजूषा घोंखि घाँखि कहुना आचार्य परीक्षोत्तीर्ण भेलहुँ। साहित्यिक कोनो परिवेश नहि छल, मुदा तुक जोड़ि लेबाक पूर्वजन्मार्जित संस्कार अवश्य छल, से तुकबन्दी वा थुकबन्दी जे कही से करऽ लागल छलहुँ। संस्कृतक युग ह्रासोन्मुख छलैक। आजीविकाक हेतु ई तुकबन्दी हमर सहायक भेल। मैथिलीक अध्यापनक सुयोग लागि गेल। मैथिलीकेँ सबल सुपुष्ट बनयबाक आ जन-जन धरि पहुँचयबाक हेतु ई सुलभ साधन आ सुगम मार्ग छल। लुतुक लागिए गेल छल जे एखनहु नहि छुटल अछि।

'आशादिशा' संग्रहक बाद कोनो संग्रह पुस्तकाकार नहि कऽ सकलहुँ, जे लिखायल से पत्र-पत्रिका, स्मारिका आदिमे प्रकाशित वा आकाशवाणीसँ प्रसारित होइत रहल, संचित नहि कयल भेल। चारिमपन आबि गेल, सब छिड़िअयले रहि जायत से विचारि यथासंभव समेटि बटोरि, के कीनत के पढ़त? ई सब बुझितो,

सेवानिवृत्त रहितो दुःसाहस कयल अछि।

पत्र-पत्रिका सभक होलिकांकमे बहुतो जोगीरा लिखैत रहलहुँ। किछु अनुजमित्रक आग्रहें नमूनाक रूपमे किछु सेहो एहिमे समाहित कयल गेल अछि।

बाल साहित्यक क्षेत्रमे किछु नहि कऽ सकलहुँ। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित 'रचनाकारसँ साक्षात्कारक अवसर पर दौहित्री पुत्री चि. शिल्पी पूछि देलक जे बाबा! हमरा सबलै की लिखलहुँ? तेँ दू चारिटा जे लिखा गेल छल तकरो समेटि लेल अछि। लक्षणा व्यञ्जनाक लूरिए ने तेँ अभिधेमे 'ठाँहि पठाँहि'।

आब ने 'काव्यं रसात्मकं वाक्यम्' केँ मान्यता रहि गेलैक ने रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्दक प्रतिष्ठा। तखन एहि जनतन्त्रात्मक शासन व्यवस्थामे बाँझी जकाँ राजनीति साहित्योकेँ आक्रान्त कयने अछि, सैह बाँझी एहिमे अधिकांश पाठककेँ भेटतनि। रुचिभिन्नता तँ स्वाभाविके थीक। तथापि सामयिकता रहितो इतिहासमूलक धूमिल चित्र देखवामे आओत से विश्वास अछि। किमधिकं विज्ञेषु।

पुनश्च –

डॉ. श्रीरामदेवझाक परामर्श, डॉ. श्रीसुरेश्वर झाक सहयोग, डॉ. श्री किशोरनाथ झाक सौजन्य, चि. श्रीशंकरदेव झाक श्रम, एकेडमीक प्रेस, इलाहाबादक व्यवस्थापक श्रीसुरेन्द्रमणि त्रिपाठीक तथा प्रभा कम्प्यूटर्सक व्यवस्थापक श्रीराजेश शर्माक तत्परता एहि संकलनक प्रकाशनमे हमर संबल बनल, तदर्थ यथायोग्य सभक प्रति आशीर्वाद, साधुवाद तथा आभार व्यक्त करैत छी।

– श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा
2058 संवत्
8-5-2001 ई०

रचना-क्रम

पृष्ठ संख्या

साध की?

अपन अछि साध की?
के नहि-जनइछ मानव-मन होइछ निश्चय निर्बाध ई।
विषयक मृगतृष्णामे भटकल सदा मानवक अन्तर,
लोभक पंक फँसल पद करइछ छूटक यत्न निरन्तर
किन्तु भेल आन्हर ताहूपर मदक समुद्र अगाध ई।
अपन अछि साधकी।
अपन सुखक आगाँ नहि अनकर दुखक पता क्यो पाबय,
एक कनैछ अनाथ, किन्तु क्यो उमगल मनसँ गाबय,
मनुज विहग खोंतामे सुटकल, घूमय द्रोहक व्याघ ई।
अपन अछि साध की।
व्याज समाजक, किन्तु बनल सौंसे राजक अधिकारी,
देखि रहल अछि गिद्ध-दृष्टि सँ ई न्यायक व्यापारी,
आइ मनुष्यक संग मनुष्ये करय घृणित अपराध ई।
अपन अछि साध की?

8-6-1957

प्रयोजन आइ

प्रयोजन आइ ई,
मनुज मनुज कैं मानय मनसँ थीक सहोदर भाइ ई।
एक ईशसँ निर्मित अछि ई संसारक सब प्राणी,
सबसँ ऊपर गुंजित हो नित ई कल्याणी वाणी,
द्वेष भाव लोकक अन्तस्तलसँ अविलम्ब बिलाइ ई।
प्रयोजन आइ ई।
ई धरती थिक रंग-मंच आ सब प्राणी अभिनेता,
विज्ञानक बल बनल मनुज भूगोल खगोल विजेता,
पसरल किन्तु विषमता दै अछि समताकेर दोहाइ ई।
प्रयोजन आइ ई?
अछि आतंकित विश्व न पजरय जगमे युद्धक ज्वाला,
पड़य न विज्ञानक गर्दनिमे पुनि नरमुण्डक माला,
सह-आस्तित्वक भाव मनुष्यक मनक दंभकैं खाइ ई।
प्रयोजन आइ ई।

21-1-1958

कविताक विषाद

शरदक निरभ्र राति चन्ना चकमक करैत
चन्द्रिकाक चुनरीकेँ चानीरंग रङै छलाह,
नगर-गाम, बाध-बोन गिरि-निर्झर सर-सरिता
सबतरि इजोड़ियाक चनबा टङै छलाह।

कोनटासँ ठुनकबाक शब्द जखन कान पड़ल
चकित होइत चटपट उठि, दौड़ि ततय देखल जा
कन्या कुमारि एक क्रन्दनेक सुरमे सुर, मिला
जीर्ण तन्त्रीकेँ रहि-रहिकय रहल बजा।

आश्चर्यक क्षितिज केर परिधि कते बढ़ल गेल
अपनहु अनुमान तकर यत्नहु कय पौलहुँ नहि,
भावनाक उदधि मध्य ज्वारि जते उठल गेल
उठिते हम छोड़ि देल तकरा दबौलहुँ नहि।

विस्मय-विमुग्ध भेल हमरा तकैत देखि
बाजलि ओ–प्रश्न अहाँ पूछय जे चाहै छी
पहिनेसँ हमरा से बुझले अछि, तैयो हम
अहँक मनक भावनाकेँ विलमि कने थाहै छी।

कविता थिक नाम हमर, ब्रह्माकेर बेटी छी,
बाल्मीकि केर कण्ठ बाटेँ हम आइलि छी,
कालिदास, भवभूति, विद्यापति चन्दा झा
तुलसी ओ सूरकेर स्वरमे समाइलि छी।

केहन केहन साधक ओ सेवकसँ पूजित भय
विचरण हम कयलहुँ समस्त मर्त्यलोकमे,
कलाकेर छाती पर बैसल अज्ञान हाय!
कना रहल आइ, डुबा देने अछि शोक मे।

आजुक जे साधक मतक्का चढ़ि बैसइ छथि
गत्र-गत्र तोड़ि हमर मूड़ी मचोड़ि देल
शीशा बरकाय कर्ण-कुहर मध्य ढारि तथा
टकुआसँ भोंकि भोंकि आँखि हमर फोड़ि देल।

आन्हरि, बहीर, लुल्हि, पंगु भेलि बैसलि छी
किन्तु प्राण पक्षी नहि पिजड़ा तजैत अछि,
नाम हमर भजा भजा बड़का पाखण्डी सब
सभामंच चढ़ि-चढ़ि भरि इच्छा पुजबैत अछि।

10-1-81

कहल न जाय

जे कहितहुँ से कहल न जाय।
अकबक प्राण करै अछि भीतर, बोल कण्ठसँ नहि बहराय।
चारू दिस तैं नजरि खिराबी,
किन्तु मनुक्ख कतहु नहि पाबी,
हाथ पैर दुइएटा रखितहु
दानवसँ बढ़ि राखय दाबी,
करनी एकरा सभक देखिकऽ कुकुरो वानर रहल लजाय।
पहुँचल अछि पन्द्रह अगस्त पुनि,
मन करैत अछि गुनिधुनि-गुनिधुनि,
देखत की, आतंकित अछि सब
देशक समाचार सब सुनि-सुनि,
हयत भविष्य कोना स्वर्णिम यदि वर्त्तमान कैं रहल लुटाय।
संजोगल छल स्वप्न मनोरम
सबकैं तोड़ि देलक ई निर्मम,
ध्वस्त चतुर्दिक सकल व्यवस्था
तैं लागल अछि सबकैं दिग्भ्रम,
आबथु कृष्ण, जगाबथु सबकैं पाञ्चजन्यकैं पुनि धुधुआय।

9-8-95

●

आशाक किरण

कतय छलहु आ आइ कतय छी, रहि रहि मनमे प्रश्न उठैछ।
औँड़ि मारि, मन रहि जाइत अछि, उत्तर एकर न ताकि पबैछ।।

जे जगभरिकेँ बाट देखौलक, अपने आइ गेल भुतिआय।
ज्ञानक दीप अखण्ड जरै छल, कोन बसातेँ गेल मिझाय।।

भाषा-भूषा विविध, विविध मत-पंथ तथा भोजन परिधान।
रहितहु, अन्तर्निहित एक धारा सबमे अछि एक समान।।

करुणा, ममता, दया, त्याग-बल बढ़ल मातृ-भूमिक उत्कर्ष।
किन्तु आइ कहि त्राहि-त्राहि, अछि कुहरि रहल ई भारतवर्ष।।

लागल कोन अन्हरजाली जे सूझि रहल नहि उबरक बाट।
खयलक कोन घून, जे देशक पौरुष आइ पकड़लक खाट।।

दुर्बुद्धिक मारल मति, लागय अनचिन्हार अपनो इतिहास।
अपनहि मुँहेँ अपन रत्नक कय रहलहुँ अछि हम सब उपहास।।

किऐ मनुक्ख मनुक्ख रहल नहि, राक्षससँ बत्तर बनि गेल।
तेहन तेहन दुष्कर्म करय जे नरकहुमे जा ठेलम ठेल।।

डेग-डेग पर मृत्युक नर्त्तन, घर-घरमे पैसल आतङ्क।
यदि पौरुष नहि जागत, लागत निश्चय देशक माथ कलङ्क।।

छिटकि रहल आशाक किरण जे बलिदानीक पंक्ति अछि ठाढ़।
करत समर्पित शीश देश-हित संकट भनेँ प्रचण्ड प्रगाढ़।।

पुनः 'मातरम् वन्दे' ध्वनिसँ दिग्दिगन्त अनुगुंजित आइ।
करय अडैठीमोड़ देश, से देखि बढ़य विश्वास सवाइ।।
बढ़ल आसुरी-वृत्ति चतुर्दिक, पापक भेल जाय विस्तार।
जा धरि धर्मक ग्लानि न होइछ ता प्रभु नहि लै छथि अवतार।।
से शुभघड़ी निकट बुझि पड़इछ, असुर दलक अछि अन्त समीप।
पसरत शुभ आलोक लोकमे, ससरत तिमिर, बरत पुनि दीप।।

15-2-92

●

दिग्भ्रम

हम दिग्भ्रमवश भुतिआयल छी, सुपथक समुचित ज्ञान कहाँ अछि
नाम रटैत रहै छी जनिकर स्मरण तनिक बलिदान कहाँ अछि।
एके गाछक वृन्त-वृन्ततँ
देखि पड़ैछ फराक फराके
किन्तु फूल-फल सब फुनगीपर होय तकर अनुमान कहाँ अछि।
धरती बँटल रहय अपनेसँ
सागर सब मिलि बाँटि लेल अछि,
तन-मन-वचन भने बाँटल हो, आसमान असमान कहाँ अछि।
रंग बिरंगक फूल लोढ़ि कय
माली सुन्दर हार बनाबय
रंग सुरभि रहितो विभिन्न ओहि ताग बीच व्यवधान कहाँ अछि।
नाक-कान-मुख-आँखिक रचना
मुण्डे-मुण्ड विभिन्न प्रकारक
किन्तु रक्त-मांसक रचनामे नियतिक भिन्न विधान कहाँ अछि।
मुसलमान, हिन्दू इसाइ सब
एकरे अन्न-पानिसँ पालित,
भाषा-भूषा भने भिन्न हो, भिन्न सूर्य आ चान कहाँ अछि।
जाहि भूमिमे जन्म लेल अछि
तकरे लै ई जीवन अर्पित
कहबा लै कहि देल करै छी, करब किन्तु आसान कहाँ अछि।
अपन-अपन निष्ठा अनुसारेँ
अछि उपासना-पद्धति बाँटल
किन्तु एक गन्तव्य सभक अछि, ताहि सत्यकेर भान कहाँ अछि।
एहू युगक महामानव सब
सबकेँ प्रेमक पाठ पढ़ौलनि
पाठ तकर सब ठाम करै छी, क्रिया करी से ध्यान कहाँ अछि।

10-9-95

●

परिणति

काल चक्र पर ससरल जाइत अछि संसारक जिनगी,
काल्हि रहय धधकल ज्वाला आ आइ मिझायल चिनगी।

घन घमण्ड उमड़ल छल, चमकय रहि-रहि विद्युल्लेखा,
पावस गेल, गगन मण्डल मे रहल न नीरद-रेखा।

शरदक होइत विकास कासकेर मधुर हास छिड़िआयल
सिङ्हार झड़ि, बिलहि सुरभि, पुनि कालक गाल समायल।

हेमन्तक छायामे सगरो बाध भरल छल-अन्न,
ततहि आब देखयमे आबय कनइत खेत हकन्न।

अबितहि निष्ठुर शिशिर ककर नहि कम्पित कयलक गात
महावृक्ष सबहुक शाखासँ पातक भेल निपात।

हलसल-फुलसल नवोल्लासलय आयल फेर बसन्त,
नव किसलयसँ भरल-पुरल पुनि ठूठ गाछ पर्यन्त।

अहह! सुनह घबराह न, त्यागह जनु जीवनसँ आशा,
काल करैत रहल अछि एहिना नव-नव नित्य तमाशा।

स्वर्णथारमे पाबि रहल छी जे जन मेवा-मिसरी,
आओत काल झपटि लय जायत एतबा टा नहि बिसरी।

कालक गाल विशाल तते जे समा जाय आकाश
परम सत्य जे सृष्टिक परिणतिए थिक महाविनाश।

23-3-77

परिस्थितिवश

विपत्तिक अबइछ जखन बिहाड़ि, ककर मन भय न ऊठैछ-अधीर?
जीवने थिक महान संघर्ष
रहै अछि अबिते दुख आ हर्ष
वर्ष पर बीतल जाइछ वर्ष धनुषसँ छूटल जाइछ तीर।
ककर मन भय न उठैछ अधीर।।
हर्षमे सभक चित्त उधिआय,
शोकमे अयलो बल अधिआय,
जाय धरि सब जन एके ठाम, रहय राजा वा रंक-फकीर।
ककर मन भय न उठैछ अधीर?
हर्षमे अधर-अधर मुसकान,
शोकमे आकुल-आकुल प्रान
ध्यानमे अबितहि विषम वियोग, नयनमे भरि-भरि आबय नीर।
ककरमन भय न उठैछ अधीर?
विचारक वनमे झंझा झोंक
देखि कयअड़ि जाइछ जे लोक,
रोक वा टोक न मानि लड़ैछ, तखन नहि रुचय गुलाल अवीर।
ककर मन भय न उठैछ अधीर?
चली तैं आगाँ पाछाँ देखि,
बनाबी मित्र विवेक परेखि,
लेखि यदि क्षण भंगुर संसार तखन की मोल रखैछ शरीर?
ककर मन भयन उठैछ अधीर?

28-3-78

●

कोरामिन केर प्रयोजन

बरिसल गगनक आँखि अहर्निशि
तैं धरती दहबोर छै,
हबोढकार गृहस्थ कनै अछि
नोर भरल दृगकोर छै।
रहि रहि गुम्हड़य मेघ
उताहुल भेल नदी अगराय तैं,
खेत-खेतमे ठाढ़ जजातिक
प्राण सुखायल जाय तैं।
एक गामकेर तोड़ि देलक
सम्बन्धे दोसर गामसँ,
पानि भेल छथि स्वयं हिमालय
निःसृत अपने घामसँ।
घर दुआरि भसिआयल अगणित
उमड़ल बाढ़िक वेग पर,
आशंकाकुल हृदय प्रकम्पित
भेल सभक प्रति डेग पर।
विज्ञानक बल लड़ओ प्रकृतिसँ
जिद्दी मनु-सन्तान ई,
तोड़ि सकत किन्नहु नहि प्रकृतिक
निर्मित सुदृढ़ विधान ई।
यदि नकारि अस्तित्व ईश्वरक
पड़त कठिन संग्राम मे,
मनुज समाज अपन करनीसँ
अपने फँसत कुठाममे।
सड़क कातमे भारत माता
आइ कनैत हकन्न छथि,
सुजलासँ सजला, सुफलासँ
विफला भेलि विपन्न छथि।
संजय सुनबथि समाचार
नव दिल्ली केर धृतराष्ट्रकैं
छैक कोरामिन केर प्रयोजन
भारत सन मृत राष्ट्रकैं।

10-9-74

●

कवि कोकिलसँ

1

'बाल चन्द विज्जावइ भासा' जनिक लेखनी ई कहि गेल,
'दुइ नइ लग्गइ दुज्जन हासा' आइ ताहिमे उठल झमेल।
विसपी बिष पिबि पुरिवामे अछि पड़ल, तकर के करत पुछारि,
अपनहि हाथैं ऊक लेसि हम अपने घरकैं रहलहुँ जारि।
आवि लोक-भाषा-काननकैं जे कोकिल गुंजित कय गेल,
दुइ नइ लग्गइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल।।

2

आइ भवानीपुरमे देखी अपने उगना बनल बताह,
तेहन मति-भ्रममे सब पड़लहुँ, बुझि नहि सकी नीक अधलाह।
अपने धक्का मारि संस्कृतिक भित्ति कोना ई ढाहल गेल,
दुइ नइ लग्गइ दुज्जनहासा आइ ताहिमे उठल झमेल।।

3

वंग कलिंग असमसँ लय अनुगुंजित होइत रहल ब्रज-भूमि,
दिल्ली पथ पर सूनि नचारी यवन शासको उठला झूमि।
तनिक माधुरीमे अछि सम्प्रति तीत चिरैता घोरल गेल,
दुइ नइ लग्गइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल।।

4

वेदमन्त्रवत् जनिकर वाणी बिनु भय सकय न शुभ संस्कार,
छओसय वर्ष समय बीतल आ एखनहु मुग्ध रहय संसार।
अपनहि करनीसँ की हम सब जानि-बूझि कय बनी बलेल?
दुइ नइ लग्गइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल।।

5

सुरसरिस्वयं ससरि भक्तक लग अइली साक्षी अछि इतिहास,
भक्तिक महिमासँ मण्डित 'विद्यापति मठ' दय रहल प्रकाश।
काल-दीपमे यशोवर्त्तिका रहत-जरैत बिना घृत-तेल,
दुइ नइ लग्गइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल।।

6

प्रीतिक राधा-माधव-पद पढ़ि तजथि चेतना श्रीचैतन्य,
'कविपति विद्यापति मतिमाने' थिक गोविन्दक भक्ति अनन्य।
ककरो मनकैँ मोहिलेब से बुझलहुँ बामा हाथक खेल,
दुइ नइ लग्गइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल।।

7

हे कविशेखर! कठिन तपक फल अपने पौलहुँ शिवसायुज्य
पुरुषार्थक पथ-निर्देशक बनि आइ विश्वमे छी सम्पूज्य।
शस्त्र-शास्त्र दूनूकैँ सम्यक रूपैँ तैँ संरक्षण देल,
दुइ नइ लग्गइ दुज्जन हासा आइ ताहिमे उठल झमेल।।

8

हे कविकोकिल! अहँक साधनासँ मिथिला पौलक उत्कर्ष,
चरण-चिह्न पर चलइत मैथिल रहत करैत सदा संघर्ष।
के समर्थ अछि अधिगत गौरव-गरिमा पाछाँ सकत धकेल,
दुइ नइ लग्गइ दुज्जन हासा आइ ताहि मे उठल झमेल।।

9

अहँक चरण-वन्दन अभिनन्दन करक मनोरथ मनहि विलीन,
शिवसिंहक बिनु शिथिला मिथिला लागि रहल अछि शक्ति-विहीन
सहज सुमति वर दिअओ गोसाउनि राखथु सब-अपनामे मेल,
बाल चन्द विज्जाबइभाषा तनिक लेखनी ई कहि गेल।।

1-11-78

कण्ठक छिना रहल बोल

बजौलहुँ विद्यापतिकेर ढोल, मुदा उतरल नहि आँखिक खोल।
तृप्त अछि कान सूनि कय गीत,
मुदा मुँह आरो बेसी तीत,
तृप्त अछि नृत्य देखिकय आँखि,
उड़ैछी कल्पनाक चढ़ि पाँखि,
छिनायल जाइछ कण्ठक बोल, करै छी जयजयकारक घोल।
करै छी पास बहुत प्रस्ताव,
बुझै छी जितलहुँ बाजी आब,
बजाबी थपड़ी ताड़मतोड़,
बजैछी-छी हम तीन करोड़
होइत अछि सबतरि गर्दम गोल, मुदा फुजले जाइत अछि पोल।
लेलक लघीक जगह 'पेशाब'
करै छी सब क्यौ 'नाश्ता' आब
खाइत अछि 'खाना' आब समाज
बनल आपत्ति शब्द 'एतराज'
करी अष्टम सूची अनघोल, मैथिली घरमे करथि किलोल।
भोजमे 'चावल' परसल जाय,
न क्यौ तीमन-तरकारी खाय,
चरै छल 'सब्जी' गाय-महींस,
आब भेटय भनसाघर दीस,
मातृभाषाक आब की मोल, बजनिहारे सब जखन बनोल।
तकै छी 'लड़का लड़की जोग,
गेल सौराठो धरि ई रोग,
घरेघर रिंकी पिंकी दाइ
तनिक पिन्टू मन्टू छथि भाइ
नगर नहि, गामहु टोलक टोल, भेल-अछि सबतरि डोलमडोल।
कटै अछि मिथिला भाषा काहि
तकर की अछि ककरो परवाहि?
दखल कय रहल आबि चिनमार,
फुजल तकरा लै चारू द्वार,
सपूतो सब तेहने भकलोल, चिबाबथि धो-धो काँचे ओल।

18-11-83

विडम्बना

पेटक नापेसँ स्वतन्त्रतोकेँ हम नापि रहल छी,
अपने घरमे आगि लगा सब सुखसँ तापि रहल छी।
जे स्वतन्त्रता पेट भरय नहि, तकरा हम लतियाबी,
पर-उपदेश कुशल बनि अपना अन्तरकेँ पतियाबी।
पेट भरय से थिक आवश्यक, ततय न किछु मतभेद,
ततबा सुविधा रहय जाहिसँ चलय लोक आ वेद।
किन्तु जीवनक साध्य पेटकेँ हम सब मानि चलल छी,
कहियो छलहुँ हिमालय, सम्प्रति गलि गलि पानि बनल छी।
जे मनुक्ख, से स्वतन्त्रता-हित करइछ जीवन अर्पण,
दुइ टाङ्क पशु पेटक खातिर करइछ आत्म-समर्पण।
एहन मनुज आ श्वान संघमे अन्तर की रहि जाइछ,
अनकर परसल पात छीनि खयबा लय जे लड़ि जाइछ?
थिक स्वतन्त्रता आवश्यक हो मानवताक विकास
भारतीय जीवनक लक्ष्य नहि केवल भोग-विलास।
नहि स्वतन्त्रता उच्छृंखलताकेर कतहु पर्याय,
नव सर्जन ओ गुण अर्जन हित ई थिक सरल उपाय।
रोटीसँ लगबै अछि जे क्यो एहन अमूल्यक मूल्य,
से समाज बुझनुकक नजरिमे थिक निश्चय पशु तुल्य।
ओ स्वतन्त्र रहि सकत कोना जकरा न आत्म-सम्मान
श्वास तथा प्रश्वास क्रिया करितहु थिक मृतक समान।
भेल कते बलिदान, तखन भेटल अछि एहन सुयोग
कयलनि युग निर्माता सत्य अहिंसा केर प्रयोग।
ताहि सत्यकेँ बिसरि, असत्यक आश्रय हम सब लेल,
स्वावलम्बनक पाठ न पढ़लहुँ, बिगड़ि गेल सब खेल।
आबहु समय अछैत भारतक गौरव हो रखबाक,
हो अभिलाषा मनमे सरिपहुँ एकर सुफल चिखबाक
तँ पेटे भरबा लय जनु क्यो एना अहुछिया काटी,
भौतिकताक छोड़िकय नाङड़ि धरी अपन परिपाटी।
गौरवमय अपना इतिहासक घटने सब बिसरलछी
हन्त! बढ़य जग आगाँ, हम सब पाछेँ दिस ससरल छी।

8-6-79

अनुशासन बन्धन

अनुशासन बन्धन तँ उकरू लगैत अछि
आ स्वेच्छाचारिते स्वतन्त्रता बुझाइत अछि
नहि तँ, स्वतन्त्र देशकेर निवासीक हेतु
अनुशासन सहज ओकर स्वाभाविक धर्म थिकै
से जँ नहि बुझलक तँ भेल ओ स्वतन्त्रा कोना?
ताहि हेतु शासनकेँ अंकुश लगबय पड़ैक
जकरा कनेको कर्त्तव्य बोध छैक अपन
तकरा लै निश्चय कलंकक ई बात थिकै
किन्तु की समाजकेँ कर्त्तव्यबोध छैक अपन
एहि जटिल प्रश्नक तँ उत्तर तकबाक होयत
से स्वेच्छाचारिता तँ सीमाकेँ टपने अछि
कोन क्षेत्र शेष जतय देखि नहि पड़ैत हो?
ज्ञान प्राप्ति हेतु पहिल सीढ़ी तँ श्रद्धाथिक
किन्तु आइ श्रद्धेसँ सबकेँ असर्द्धा छै
जखनहि जे जेठ भेल तखनहि से दूरि गेल
बूढ़ ओ पुरान लोक बुद्धि सँ विहीन मुदा
काल्हुक जे जनमल से बुद्धिक बखारी अछि
टोकबै कनेको तँ चट दऽ मुँह दूसि लेत
कहि देत जाउ जाउ, अनका पड़तारिऔक
हम तँ अभिमन्यु थिकहुँ, गर्भेसँ चक्रव्यूह
भेदनकेर प्रक्रिया सिखनहि बहरयलहुँ अछि।
बेसी किछु बाजब तँ मानि लेत महादेव
बं बं बू कहि कऽ झट ठामहि ओंघड़ाय कहत
कयने छी आटाँकेँ गील आनि घरसँ तेँ
बिनु खुर पुजाइ लेने कलमे उठाउ किएक?

9-5-76

पसरि रहल धुआँ

पसरि रहल धुआँ कतहु आगि जरैए,
भड़कि उठत ज्वाल से संकेत करैए।
बहैत छै बिहाड़ि विपिन कापि उठै छै,
अपनहिमे घर्षणसँ आगि उठै छै,
सकल जीव-जन्तुमे पड़ाहि लगै छै,
सिंह ओ सियारमे न भेद रहै छै।
हाथी मदमत्त सेहो पाकि मरैए।
पसरि रहल धुआँ कतहु आगि जरैए।।
कन्द-मूल सेहो सुड्डाह होइत छै,
ज्वालामे असहनीय दाह होइत छै,
चतरल बड़-पाकड़ि केर हरित-भरित गाछ
छन भरिमे जरि जरि खकस्याह होइत छै,
कते दिने फेर वनक घाव भरै'ए।
पसरि रहल धुआँ कतहु आगि जरैए।।
दावानल एहिना उत्पन्न होइत छै,
अकठ संग साँखुओ विपन्न होइत छै,
धाहीसँ धरती विषण्ण होइत छै,
जाधरि वन जरि कय सम्पन्न होइत छै,
गगन धरिक छाती पर टेम बरैए।
पसरि रहल धुआँ कतहु आगि जरैए।।

15-3-81

चिनगी

बाँसक खुट्टा पर जकर बड़ेरी टेकल छै,
ताही फूसक घर पर ई चिनगी फेकल छै।
धधकैत कते लगतै देरी देखत दुनियाँ
जे ओलतिक धधरा बढ़ि मथनी धरि ठेकल छै।

चैतक पछबा केर धुक्कड़ तकरा हौंकै छै,
ई हाल देखि कय प्राण ककर नहि चौंकै छै,
सुरसुरी उठल छै ओहिना प्राण अवग्रहमे
तइ पर मेरिचाइक दओंक झोंकिकय छौंकै छै।
अनके घर जारि पजारि सभक ई स्वार्थक रोटी सेकल छै।

देलकै के देशक सब इनारमे भाङ घोरि?
नैतिकताकेर हत्या कय सत्यक टाङ तोड़ि,
देलकै समाजकेँ भुस्सा थड़ि बैसाय हाय!
अपनो समाङकेँ रहलै अपन समाङ छोड़ि,
दुर्बुद्धिक द्वार फुजल सबतरि सद्‌बुद्धिक बाटे छेकल छै।

17-3-81

संस्कृत ओ संस्कृति

जखन मनुज पशुवत जिबैत छल, छलै न ज्ञानक लेश,
तरु-छाया अथवा गिरि-गह्वरमे सहैत छल क्लेश,
तखन दृष्टि दय अनुपम, सुमधुर वचनक देलनि दान,
से थिक संस्कृत हमर धरोहर जे सम्प्रति म्रियमाण।

ऋषिगण अनुखन दर्शन चिन्तन में मन राखल लीन,
जकर अनादर कयनहि बनलहुँ सब बल-बुद्धि-विहीन,
जठरानल धधकैत रहल बरु, बिवसन रहल शरीर,
राखल तदपि जोगाय जतनसँ धीर वीर गम्भीर।

जाहि बलैं एखनहु मनुक्ख बुझि रहल सगर संसार,
तकर पतन हा! परक नकल कय कहबी हम बुधियार,
भेल स्वराज, अपन अनुपम निधि आबहु धरिय जोगाय,
वैभव अतुल अछैत पराभव एकर कहल नहि जाय।

जननी सकल प्रदेशक भाषा केर कनैछ निछोह,
पोसल पूत अनेक, बुढ़ारीमे बिसरल सब सोह,
कहब कतेक कहाँ धरि दुर्गति रुद्ध भेल अछि कण्ठ,
सज्जन दुर्गंजन सहैत छथि, पुजा रहल सब लण्ठ।

भाषा-भूषा खान-पानमे रहितो रूप अनेक,
रहल सदा आसेतु हिमालय संस्कृतिमे ई एक,
ताहि मूल पर किछु उत्पाती अछि करैत आघात
नत-मस्तक रहितय से उनटे चला रहल अछि लात।

संस्कृत ओ संस्कृतिमे चिरदिन सँ अटूट सम्बन्ध,
संस्कृति-हीन समाज कहाबय आँखि अछैतो अन्ध,
आइ सांस्कृतिक परम्पराकैं लेलहुँ किदन बनाय,
देखू देशक चरण गर्त्तमे दिन-दिन धसले जाय।

26-6-82

सांस्कृतिक घुमसाही

के कहैछ नीरो थिक व्यक्ति वाचक संज्ञा टा,
रहल होयत कहियो, जे रोमक सम्राट छल।
किन्तु अपन देश, एहि प्रजातन्त्र देश लेल
नीरो मानसिकता थिक, भाववाचक संज्ञाथिक।
सत्तरि करोड़ मध्य –
नहि सत्तरि लाख अथवा सत्तरि हजार
तदपि सत्तरिसय कमसँ कम लोक तँ अवश्य अछि
जकर रोम-रोम आइ नीरोमय भेल छैक।
दिल्ली, कलकत्ता ओ बम्बइ, मद्रास
तथा पटना ओ लखनउ सन राज्यसभक
छैक जते बनल राजधानी सब
ततय ततय मुग्ध मनेँ बंशी बजबैत अछि।
मदिराक प्यालीमे नाककेँ डुबौने
आ मुर्गीक सिद्ध टाङ दाँतसँ तिरैत अछि।
विषुवत रेखा समान अपना समाज मध्य
गरीबीक रेखाकेँ अंकित करबाक हेतु
आर्केस्ट्रा पार्टीमे तकने फिरैत अछि।
मैक मोहन रेखा जेना चीनकेँ अमान्य छैक
तहिना दरिद्राकेँ ई रेखा मान्य नहि।
अङरेजक राज्यमे दरिद्रा लक्ष्मीक जेठि
बहिन बनलि गाम-गाम नाचल फिरैत छलि,
आब तँ विवेक, बुद्धि विद्या आ नैतिकता
सबकेँ पछाड़ि, मत्त नचिते नहि, गबितो अछि।
सैह नृत्य-गीत आइ संस्कृति संज्ञा धराय
पछिले दिन दिल्लीमे घुमसाही कयलक अछि।

25-12-86

बापू सँ

1

आप्त वचन बापू! अहाँक जे हमसब तँ छी सबटा बिसरल,
जतय प्रकाशक पुंज-जरै छल ततहि अन्हार आइ अछि पसरल।
अहिंसाक जे नञ्‌समास छल सत्यक आइ पछोड़ पकड़ने
सबतरि जगभरि विचरि रहल अछि मानवताकेँ सतत जकड़ने।।

2

विश्व-बन्धुता केर बात तँ वचने धरि सम्प्रति अछि सीमित,
क्रिया रूपमे सांघातिक शस्त्रास्त्रक अछि भण्डार अपरिमित।
स्वार्थक महाव्याल बीहरिसँ रहि रहिकय फुफकारि रहल अछि,
धर्मक रक्षा केर नाम पर म्लेच्छक दल ललकारि रहल अछि।।

3

शत्रु मित्रमे भेद बुझत से बुद्धि सभक भुतिआय गेल अछि
शंकर कहुना रुद्र वनथु बस तकरे एक उपाय भेल अछि।
भौतिकताक दौड़मे मानवताक बात चल गेल रसातल,
शुम्भ-निशुम्भ लडौटा कसने ठोकय ताल अहंसँ मातल।

4

अर्थे सभ्यताक परिचायक, अर्थ बनल अछि मूल अनर्थक,
बापू! बुझना जाइत अछि जे गेल अहँक बलिदान निरर्थक।
सज्जन जे जन छथि धरती पर तनिका लोक बुझै छनि कायर,
अछि विज्ञान भिडल जे कहुना ब्रह्मा बाबा होथु 'रिटायर'।।

5

दीन-हीन सौंसे संसारक जन-साधारण अछि आतंकित
सेवाव्रती फलाहारी सब सेवेकैं कय देल कलंकित।
संस्कृतिकेर विकासक नामैं विकृति प्रकृतिकैं करय प्रदूषित,
क्रूरताक मस्तक पर देखी चन्द्रकान्तमणि आइ विभूषित।।

6

महाविनाशक क्षणक आगमन सम्भावित हो, तेहन लगै अछि
कहितहुँ सब ही फोलि, हृदय मे भाव अजस्त्र अनन्त जगै अछि।
किन्तु भेल कण्ठावरोध तैं मनहि अहुछिया काटि रहल छी,
आ कुसियारक पोर जकाँ पछवामे अपने फाटि रहल छी।।

7

रामराज्य तँ एक हकारक योगैं आइ हराम राज्य अछि
कदाचार युगधर्म बनल तैं सदाचार सर्वथा त्याज्य अछि।
नगर-नगरमे चौक-चौक पर प्रस्तरमूर्त्ति अहँक अछि स्थापित
गामक देश कहबितो बापू! गामे भय रहले विस्थापित।।

8

गणतन्त्रक शासक गणपतिकेर धोधि क्रमहि फुलले जा रहलनि
पता लगयबालै अवैध धन पुलिसक दल हुलले जा रहलनि।
भीतर नाला गन्हा रहल अछि बाहर सँ सब सीधा-सादा
बापू! सरिपहुँ एतय ध्वस्त अछि जनतन्त्रक सबटा मर्यादा।।

24-1-84

रातिसँ कानि रहल आकाश

नओ अगस्त क्रान्तिक बीतल अछि पूरा वर्ष पचास।
राखि हृदयमे कोन कल्पना कयल शीश बलिदान,
आइ ताहि बलिदानी सभहिक छटपटाइ छनि प्राण,
त्याग तपस्या छोड़ि करै छथि नेता भोग विलास।।
जन प्रतिनिधि पटना दिल्ली बसि, पीबथि रस अंगूरी,
जनताकेँ परतारथि ई कहि–'अछि आर्थिक मजबूरी,
राखू धैर्य अवस्से पूरत सकल समाजक आश।।
घोर चरित्रक संकट, नैतिकता काटय बपहारि,
सत्य-असत्यक, धर्म-अधर्मक बीच मचल अछि मारि,
त्याग गेल पाताल, पूर्णतः आहत अछि विश्वास।।
हर्षद त्रासद बनल, कहथि थिक विरोधीक षडयन्त्र,
अरब-खरब ऋण चढ़ल माथपर जपि-जपि गान्धी मन्त्र,
अपरिग्रहक प्रसाद पापकेँ पचबक करथि प्रयास।।
जन प्रतिनिधि गण बिका रहल छथि सत्ता पक्षक हाथ,
भारत विश्वक रंगमंच पर उठा रहल अछि माथ,
पहिलुक गौरव छाड़ि, रचै छथि ई स्वर्णिम इतिहास।।
वाम, दहिन आ मध्य राजनीतिक ई तीनू बाट,
सबसँ ऊपर भेल 'माफिया' आ तस्कर सम्राट,
अनुशासन जनतन्त्रक शव पर रचा रहल अछि रास।।
न्यायमूर्ति भ्रष्टाचारक पथ पकड़ि चलथि निर्धोख,
जे महाभियोगक विरुद्ध सहयोग करथि भरि पोख,
से भ्रष्टाचारक उन्मूलन पर दय रहल प्रकाश।।
आइ न काल्हि अवस्से करता ई देशक उद्धार,
तावत अपनालै वनबै छथि स्वर्गक फूजल द्वार,
सात पुश्त लै संचित होइतहि लै लेताह संन्यास।।
सूर्य-चन्द्र दूहू लोचनसँ टप-टप टपकय नोर,
मनक व्यथा कहबा लै पवनक व्याजेँ कम्पित ठोर,
भारत माता लै रहली अछि रहि-रहि दीर्घ निसास।।

6-8-93

सिंहावलोकन

बीतल आध शताब्दी जहिया देश भेल स्वाधीन,
एतबहि दिनमे बिलटि गेल सबजे किछु छल प्राचीन।
गान्धीजीक सकल चिन्तन सपने बनि कऽ रहि गेल,
सब सुख-सुविधा सीमित एखनहु किछुए लोकक लेल।
गाम धसल पाताल, नगर उठि चूमि रहल आकाश,
किछु घरमे पेपच पड़ैछ, बाँकीमे पड़य उपास।
ग्रामवासिनी भारतमाता बनलि 'इण्डिया' कानथि,
कोटि-कोटि सन्तानक क्रन्दन पथने कान अकानथि।
खण्डित भेल देश पहिले दिन, आब समाजो टूटल,
हाथ पसारि रहल छी लेने टिनही बाटी फूटल।
कृषि व्यवसाय मुख्य छल, पोषक छल कुटीर उद्योग,
ई पँचबरखा भेल योजना, रहल न किछु नीरोग।
रहि सकलहु ने घरक, घाट धरि पहुँचल नहिए भेल,
फकफक-फकफक दीपक-जरइछ बाती अछि बिनु तेल।
भौतिकवादक चमक-दमकमे आँखि तेना चोन्हरायल,
पहिलुक अरजल गेल, हाल पर हाथ न किछुओ आयल।
नैसर्गिक वन उजड़ल, जन्मल ई कंक्रीटक जंगल,
पर्यावरण प्रदूषित चौदिस पसरल गेल अमंगल।
भूगर्भक संचित निधि सब मडनीमे फुकारहल अछि,
राष्ट्रक धन जेम्हरे जे पाबय तेम्हरे नुका रहल अछि।

कर्णधार जे बनला से कुड़ियौलनि अपने पेट,
जनताकेँ टल्हा, अपना सोना चौबीस करेट।
सौंसे सदाचारकेँ टप दऽ कदाचार गिड़ि गेल,
न्यायपालिकासँ विधायिका अछि सोझे भिड़ि गेल।
साक्षर शब्द उनटला पर सद्यः राक्षस बनिजाय,
जे कहबय नेता जनताकेँ सैह रहल भुतिआय।
केवल मत मङ्बाक समय मे आबथि बनि जन-सेवक
जितला पर सर्वज्ञ कहाबथि, जनता कहबय बुड़िबक।
जन प्रतिनिधि अपनाकेँ मानथि संविधानसँ ऊपर
ओ बैसथि गाछक फुनगी पर आ मतदाता भूपर।
तेँ मतदाता पतलो खड़रथु, फल सब हुनके हिस्सा,
ओ सगरो संसार घुमथु, जनताकेँ सुनबथु खिस्सा।
रामराज्य शब्दक पाछाँमे भेल हकारक योग,
तेँ गणतन्त्रक जगह पकड़लक 'गन'–तन्त्रक उद्योग।
आन आन सब देश अपन मिलि जुलि कयलक उत्थान,
चौबटियापयर हकमि रहल अछि थाकल हिन्दुस्थान।

20-1-97

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

महावीर फुकलनि लंकाकेँ बहल पवन उनचास।
उनचासम गणतन्त्र दिवस पर हो एहने आभास।।

रहथि अशोक-वाटिकामे सीता आ वन मे राम,
एहि दशालै के दोषी, से जानथि सीताराम,
दलदलमे अछि धसल सकल दल छोड़य दीर्घ निसास
उनचासम गणतन्त्र दिवस पर हो एहने आभास।

डबरा छोड़ि छोड़ि पोखरि दिस छरपय ढाबुस बेङ,
बगुला संग ढोँढ़ आ बेङ्ची जोति रहल अछि गेङ,
काँकोड़ सेही किछु पयबालै पोसय मनमे आश,
उनचासम गणतन्त्र दिवस पर हो एहने आभास।

जनताकेर नजरिमे सम्प्रति छैक कोन उत्कर्ष?
ढम-ढम ढोल नङाड़ा पर अछि स्वर्ण जयन्ती वर्ष,
लोकक जान छोड़ि, सब वस्तुक दाम चढ़ल आकाश,
उनचासम गणतन्त्र दिवस पर हो एहने आभास।

ओर छोर नहि तोड़-फोड़केर भेल कते गठजोड़
किछु धकिआबय जकरा किछु धयने अछि तकर पछोड़,
कतहु मचल हड़कम्प, कतहु सुस्पष्ट विरोधाभास,
उनचासम गणतन्त्र दिवस पर हो एहने आभास।

अपन पीठ सब अपने ठोकय करय मदारी खेल
एतय लोककेँ भेटि न रहलै लालटेममे तेल,
गाम-गाम धरि बिजली खम्भा केवल लुप्त प्रकाश,
उनचासम गणतन्त्र दिवस पर हो एहने आभास।

देशक मतदाता सब केँ छनि करइत अकबक प्राण
एहि अराजकताक पंकसँ करत कोना के त्राण,
पंकेसँ पंकज जनमै छै मनजनु करिय उदास,
उनचासम गणतन्त्र दिवस पर राखथु से विश्वास।

15-1-98

दिग्भ्रान्त राष्ट्र

हे दू अक्टूबर पुण्य दिवस।
अभिनन्दनीय छह, किन्तु कोना अभिनन्दन तोहर
कऽ सकबह, छी आइ विवश।
स्वाधीनताक लऽ नाम विवशता आयल अछि,
रग-रग भ्रष्टाचरणे आइ समायल अछि
सबतरि डपोरशंखी डिगडिगिया बाजि रहल
जनता मत गमा फेर लटुआयल अछि।
तौं राष्ट्र पिता केर जन्म दिवस
आ राष्ट्र आइ संत्रस्त कते बीरप्पनसँ
अपहरण बनल उद्योग, लोक चकुआयल अछि,
मिथ्येकेँ बुझि कय सत्य जेना भकुआयल अछि।
बगड़ा चलली खंजनिक चालि
आ अपनो चालि बिसरि गेलै
उन्नतिक शृंग बुझि चलल देश
खत्ते दिस पैर ससरि गेलै।
दिग्भ्रान्त राष्ट्र हिंसाक नोंक पर
आइ चढ़ाय अहिंसाकेँ,
रक्षकक नाम पर भक्षक बनि
भड़काय रहल प्रतिहिंसाकेँ
जे भ्रष्ट सैह उपदेश दैछ
आ देश सुनै अछि कान पाथि,
पल-पल सन्देह बढ़ल जाइछ
भारत माता भसिया न जाथि।
हे पुण्य दिवस दू अक्टूबर।
इतिहास बनल उपहास आइ,
कय रहल सियारो बात-बात पर
सिंहो सँ परिहास आइ।

28-8-2000

अमरत्व निहित अछि निश्चित ताहि मरणमे

जे बलि चढ़बा लै तत्पर मातृचरणमे
अमरत्व निहित अछि निश्चित ताहि मरणमे।

जे जन्मल, मुइल न, से क्यौ जन सुनने छी?
पुनि अपना दिससँ आँखि किए मुनने छी।
माताक कोखिकेँ ओ बनबय गौरवमय
जे अटल रहय निर्भय भय जीवन-रणमे।

यदि जन्म-भूमि दिस आङ्गुर दुष्ट उठाबय,
सत्पुत्र तुरत तकरा यमलोक पठाबय,
जे सहि न सकय अपमान अपन इतिहासक
भूगोल रहय तकरे मुट्ठी-बन्धनमे।

जे स्वार्थ त्यागि देशक हित वक्ष अड़ाबय,
से सिंहोसँ पंजा निर्भीक लड़ाबय,
मुइलोपर से अक्षय उज्ज्वल यशभागी
गनगना उठय तकरे गुणगान गगनमे।

के शव बनि बितबय चाहत अनुपम जीवन,
केशव समान बनि अर्पय निज तन-मन-धन,
दीनक प्रति हृदय दयालु जकर बनि पिघलय
फहराय तकर कीर्ति-ध्वज समरांगणमे।

पुनि लौह पुरुष निर्भय पटेल सनचाही
ओ नहि चाही, जे छल करैत चरबाही
से अमर पुत्र भारत माताक सिपाही
जे पाबय परमानन्द रक्त-तर्पणमे।

14-12-97

राखत देशक लाज

विकट ऊर्मिमे डगमग नौका अछि बहैत चौवाइ,
उबडुब देश, उपाय न सूझय कोमहर आब पड़ाइ।
सत्ता-लोलुप-जन समाजकैं कयलक खण्ड-पखण्ड
अपराधी सब छूटि खेलाइछ, सुधुआ पाबय दण्ड।।

नगरक कोन कथा, देखइ छी गाम-गाम विष व्याप्त,
धन-जनकैं के पूछय, प्राणहुपर संकट सम्प्राप्त।
रचइत रूप गणेशक अद्भुत ई वानर बनि गेल,
पचा रहल अछि आइ छुछुन्नरि माथ चमेली तेल।।

कयल विकृत भूगोल, स्वयं इतिहास लेल ओझराय,
रूपे भेल विरूप, अकथ अछि व्यथा, कहल नहि जाय।
वंशज ककर थिकहुँ, रखलहुँ नहि ताहि सभक किछु ध्यान,
तकरे मानल सत्य, फूसि कहलक जे गढ़ि-गढ़ि आन।।

लोकक कहब छैक जे बुद्धि बढ़ै छै लगने ठेस,
ठेसी एहन ठेस लगलो पर सम्हरल नहि ई देश।
चार्वाकक अनुगमन कयल, मन-मगन रचौलहुँ रास,
धरती तँ अछि सीमित तैं रहलहुँ नपैत आकाश।।

तैं आकण्ठ धसल दलदलमे ताकय उबरक बाट,
ठाढ़ भेल अछि अर्थनीति पर सम्प्रति प्रश्न विराट।
नहि इतिहास जोगाय रखै अछि स्वार्थी सबहिक नाम,
किन्तु त्याग जे कयलनि तनिकर अंकित अछि सब ठाम।।

अन्हरायल पथ पकड़ल, जकड़ल अपने अपन भविष्य,
भ्रान्त भेल नेता त्याज्यहिकैं लेलनि मानि हविष्य।
शिवि-दधीचिकेर जन्मभूमि ई राखत देशक लाज,
करत अपन सर्वस्व त्याग पुनि दीन गरीब समाज।।

16-8-91

क्यौ मन मे नहि पोसओ भ्रान्ति

कारगिलक चोटी पर चुप्पे चढ़ि आयल छल किछु शैतान
जागरणक शुभ अवसर अबिते जागि गेल ई देश महान।
शौर्य वीर्य सम्पन्न सैन्य दल कयलक सबकेँ चकनाचूर,
बाल-बृद्धसँ युवकक स्वर धरि बाजि उठल बस एक्के सूर।
मूड़ी पकड़ि मचोड़ब, तोड़ब कण्ठ न जा, ता दम नहि लेब,
रुण्ड-मुण्डसँ पाटि धराकेँ चण्डिकाक खप्पर भरि देब।
मूसलसँ जेँ मानय तेँ ने मुसलमान राखल छै नाम
तेँ मूसलसँ धूरि-थकुचि कय करू एकर सब काम तमाम।
हुक-हुक करितो एखनहु धरि ई कइए रहल उपद्रव घोर,
अछि अखज्ज ताधरि नहि मानत, जाधरि देब न दण्ड कठोर।
पकड़ि, पछाड़ि, पटकि पृथ्वी पर पीठक खल्ला लियऽ उतारि,
रक्तबीज थिक तेँ निर्बीज बिना कयने नहि मानत हारि।
काँचे कड़चीकेर छड़ीसँ गत्र-गत्रकेँ दियऽ ततारि,
चंचल चपलासन चमकै छनि चामुण्डाक करक तरुआरि।
घन घमण्ड सम गर्जल देशक यौवन पुनि भरलक हुंकार,
काल नाग सम-जल-थल-नभसेना छोड़य रहि रहि फुफकार।
राखि अटल विश्वास हृदयमे सौंसे देश भेल उठि ठाढ़,
चकित विश्व चकुआय रहल अछि देखि देश-प्रति प्रेम-प्रगाढ़।
शान्ति-प्रिय सब दिनसँ रहले अछि भारत, तेँ चाहय शान्ति,
सब किछु सहितो रहत शान्त से क्यौ मनमे नहि पोसओ भ्रान्ति।

20-5-99

नव नचारी

शंकर! कहिया करब गोहारि,
भक्त अहाँक सदासँ मैथिल बैसल छथि ही हारि।
अपने मनसँ जन्मत बाड़ीमे जतबाजे भाङ,
लेत उपाडि, मना करबै तँ तोड़त दूनू टाङ।
कार्त्तिककैं फुसियौलक गणपतिकैं रहलनि परतारि।।
ऊँच नीचकैं समतल करबाकेर लगाबय लाथ,
धूरा झोंकि आँखिमे लोकक अपन सुतारय हाथ।
पाड़ा खेत चरय, बसहाकैं बैलाबय होहकारि।।

चालू शब्दक अनुप्रासमे भेल चकार लकार,
संस्कृत संगहि मैथिलीक कयने अछि बन्द बकार।
सरस्वती सहजहि मन्दिरमे छथि कटैत बपहारि।।
स्वतन्त्रता पयबालै गान्धीजीक रहनि हथियार,
राजनीति कुट्टी कटबामे भोथ बनौलक धार।
टी. भी. सँ बहसल नवतुरिया, देश न सकत सम्हारि।।

रखती गौरी सिंह सवारी से नहि करत सहाज,
आइ अरब सागरमे डूबय भारतकेर जहाज।
जाति-पाँति द्वारैं समाजमे फाटल तेहन दड़ारि।।
समाधिस्थ भऽ बैसल रहने आब चलत नहि काज
फाँड़बान्हि हुरदुंग मचाबय अगिलगुआक समाज।
रहल असत्य पसारि, सत्यकैं रहलनि घेंट ससारि।।

देवहुमे छी महादेव, कहबै छी अति प्राचीन,
देखू कते दखल कयने अछि अहुँक घड़ारी चीन।
भस्मासुरक जरोह अहूँकैं रहल आइ ललकारि।।
अमरपुरदीक सहोदर कहबय धरतीपर कश्मीर,
जतय सतत सिहकैछ सुवासित शीतल शुद्ध समीर।
म्लेच्छ मत्त हाथी समान नन्दन वन रहल उजाड़ि।।

27-11-95

हिनकर वन्दन हुनका सलाम

सामाजिक न्यायक नामलैत खल-दल राष्ट्रक धन टपा रहल,
दुनीर्तिक कारण लोकतन्त्र हो शिलाखण्डतर चपा रहल,
फन काढ़ि अपन चौदिस विषधर हो-जीह जखन लपलपा रहल,
दावाग्नि बनल आतंकवाद जन-जीवनकैँ हो तपा रहल।

नहि उचित तखन घर सुटुकि रही, जागी बल-पौरुषकैँ आँकी
नहि क्षुद्र स्वार्थ वश अंट-संट बाजी आ गप्पे टा हाँकी,
जन-जनक आत्मविश्वास जगा असुली दोबड़ जे अछि बाँकी
स्वर्णाक्षरमे लिखि किछुपन्ना इतिहासक पृष्ठ संग टाँकी।

अभिनन्दनीय श्री चिदम्बरम् छथि वन्दनीय अब्दुल कलाम
कय रहल सकल भारतवासी हिनकरवन्दन, हुनका सलाम,
जो सम्प्रति विश्वक रंगमंच पर देशक मान बढौलनि अछि,
वीरत्वक भाव बिझायल छल तकरापर शान चढ़ौलनि अछि।

अहिरावण कुल संभूत असुर कहबय चाहय विश्वक दादा,
जे आँखि तड़ेरय सब पर आ तोड़य मानवकुल मर्यादा,
बुझना जाइछ तकरो भऽ रहलै योग कने श्रीज्ञानझाक,
ठकमूड़ी लागल बहुतोकैँ, गुनिधुनिमे अछि नापाक पाक।

जे बुद्धि बेचि अनका हाथैं, हो श्वान बृत्तिएँ जीवि रहल,
जे फेकल पाते चाटि-चाटि अपमान अमृत बुझि पीबि रहल।
जयचन्द पथक अनुगामीकैँ एहूमे सूझइ राजनीति,
आश्चर्य-जनक घटना नहि ई, सबदिनसँ रहलै यैह रीति।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः' वाक्यक ई देश रहल अछि उद्घोषक,
पशु-पक्षी, जड़-जंगम समेत प्राणीमात्रक थिक संपोषक,
तकरा भविष्यमे कय न सकत ई म्लेच्छ निवह पुनिपुनि लांछित,
अछि अटल सदासँ सत्पथ पर निश्चय पाओत फल मनवांछित।

25-5-99

चारि गोट कुण्डलिया

अगहनकेँ लागल गहन, भावी गहन अन्हार
दाही-रौदी पाट तर दड़रल गेल बिहार।
दड़रल गेल बिहार दड़ारि घराड़ी धरिमे,
बीझल पड़ल कोदारि उदास भँडारी घरमे,
छहोछित्त छै छाती मेघो मुँहि दुसै छै
पैर तरक गेले छै, हाथो परक हुसै छै।

ठोहि पाड़ि कऽ बाधमे कानय खेत-पथार
ठाढ़ आरि पर कृषक सब पीटय अपन कपार।
पीटय अपन कपार पार ई साल न लागत,
आयातित अन्नक बल देखि अकाल न भागत,
स्थायी जाधरि करब न आब सिंचाइ व्यवस्था
ताधरि देशक सूतल भाग्य कदापि न जागत।

एमहर कृषकक बनल सब बजट भेल अछि फेल,
व्यापारी ओमहर लगा रहल मोंछमे तेल।
लगा रहल अछि तेल नफा पीटब चौगुन्ना,
मुदा कृषक मजदूर पेटमे बान्हथु जुन्ना,
जते गृहस्थ लगौलक घरसँ पूजी-पाटी
से सबटा बुड़ि गेल, हाथमे बचलै सुन्ना।

खोंसल हाँसू चारमे अपन निपोड़य दाँत
खेतिहर जन बनिहारहुक ऐँठि रहल छै आँत।
ऐँठि रहलछै आँत कतयसँ जुटतै दाना,
रौदी-दाहीकेँ सम्हारि की सकतै थाना,
चित्रगुप्त सचिवालयमे करताह बहाली
नहि तँ के कटतनि एतेक लोकक परवाना।

27-10-82

अन्तरराष्ट्रिय महिलावर्ष

सुनलहुँ अछि–
मनुष्यक उत्पादन
एखन बन्द रहत।
अन्तरराष्ट्रिय महिला वर्षक
उपलक्ष थिकै
तैयो ई ब्रह्मा ओ परम्परा
नहि तोड़ै छथि,
रखने छथि साँचा दू तरहक बनबाय
एक पुरुषक फराक
तथा दोसर महिलाक लेल।
साफ साफ पक्षपातपूर्ण
हिनक नीति थिकनि।
चीनीक दाम जेना खुलतामे एक,
तथा राशन दोकान लेल दोसर निर्धारित अछि।
हिनक एहि पक्षपातपूर्ण नीतिक विरुद्ध
रिट याचिका अदालमे दायर छनि,
विष्णुक खण्डपीठमे सुनवाइ तकर होइत छैक।
सुनलहुँ मनुष्योत्पादन कारखानाकेँ
छओ वर्षक हेतु बन्द करबाक आदेश छनि।
आबहु जँ समताक दृष्टि अपनौलनि नहि
बाइ फोर्स करा देल जयता रिटायर तखन।
सी. आर., दास पी. आर. दास एहिमे ओकील छला।
सृष्टिक संचालन लै
पुनि नवीन विश्वामित्र
बुद्धिक प्रसादात् अपने पर्याप्त छथि।

1-11-75

महादेव बाबाक फोर्स रिटायरमेन्ट

सुनलहुँ अछि–
स्वर्गक सरकारो अकच्छ अछि
महादेव बाबाक
सबटा कुचालि देखि।
पीबै छाथि भाङ
तथा चिबबै छथि आकधुथुर,
भरि दिन भकुआयल,
बौरायल रहैत छथि।
औता कार्यालय
से प्रतिदिनक कोन कथा,
मासमे दू-चारि दिन दर्शन टा दैत छथिन।
एमहर संसार कार्य शिथिल भेल जाय रहल।
जहिना नृशंस मनुज जाति बढ़ल जाइत अछि
तहिना असंख्य कीट वंश वर्द्धमान भेल।
रच्छ रहल एतबे जे
एमहर विज्ञान देव
मोटर, बस, रेल, व्योमयानक
साहाय्य पाबि, दुर्घटनासँ
भार कने हल्लुक करैत छथि।
कीट सभक नाश हेतु औषधि निर्माण करा
आंशिक संहार-कार्य पूरा करैत छथि।
आब जखन मानव-मस्तिष्क महानाश हेतु
ढेरी संहारक शस्त्रास्त्र बना लेलक अछि,
तखन पुनः महादेव बाबाक काज कोन?
सुनलहुँ अछि–
मास दिनुक वेतन अगाउ चुका
ओहो विभाग बन्द करबेक विचार छैक।
जनिका कार्यालयसँ भार्यालय प्रियतर हो
से सब हे हमर बन्धु! आबहु सचेत होउ।

1-11-75

बुद्धिमत्ता

कटहरमे लस्सा तँ प्रकृतिकेर देन थिकै,
बिनु लस्साकेर कतहु कटहर भेलैक अछि?
ऊपरसँ काँटोकाँट,
भीतरमे छहोछित्त,
कमरीकेँ ओढ़ने
आ आँठीकेँ गिड़ने को
नेढ़ाकेँ पँजिया कऽ धयने रहैत अछि।

राजनीतिकेर असल
रूपथिकै यैह कि ने?
कटहर खयबाक होअय
इच्छा जँ मनमे तँ
लस्सा लगबाक डऽर
मनसँ भगाय लियऽ।
मोंछमे ने लागय,
ने लोकमे देखार होइ,
पहिने रहि सावधान
कडूतेल औंसि लैछ
बुद्धिमान जुगता कऽ हाथ तथा मोंछमे।

किन्तु तदपि
कटहर जे गमगम करैत छैक
ताहिसँ तँ आभास
कनेमने होइते छै,
तकर छै उपायो नहि।

4-5-76

बौआ लोकनिसँ

आम होइछ अम्मत,
पुनि सैह आम होइछ मधुर,
भेद ई –
अवस्थाक धर्मथिकै, बूझि लिअऽ।
रहै छै अवस्था जा अपरिपक्व
साधारण लोको सब
आमजकाँ सक्कत
आ अम्मत रहैत अछि,
जहिना वैशाख तथा जेठक प्रचण्ड रौद
तपबैछै, पकबैछै, गुल-गुल बनबैत छै।
अनायास हरियरका खुँइचाक भीतरसँ
लाली बिहुँसैत
आबि ऊपर निखरैत छै।
तिक्ख-चोख आमिल-अँचार
बनय कँचकेसँ,
किन्तु पुनि अमौट मधुर पकलेसँ होइत छै।
जीवनकेरताप
विघ्न-बाधाक अन्हड़सँ जाधरि नहि भेट होइछ
एहिना इतराइत रहब,
आखिरतँ बौए छी, बौआइत बौआइत
आइ ने तँ काल्हि फेर बाटे पर भेट होयत।
बौआकेँ अपनो जँ बौआ भऽ जाइत छनि
बिनु ककरो कहने पथ पुरने धऽलैत छथि।

7-5-76

दू गाही दोहा

शरदक ई राका निशा नभमे चकमक चान
वैज्ञानिक गण जा जतय छिटलनि मुदित मखान
से छिड़िआयल ब्योममे लागल देखि पथार
बिछबा लै अइली उषा लेने सोनक थार

अन्हरोखे उठि भुड्डुकबा सबटा बिछि लय गेल
ताहि तामसैं रविक मुख लाल बुन्द अछि भेल
उज्जर-उज्जर व्योममे मेघखण्ड उड़िआय
चन्ना सीरक हेतु की रहला तूर धुनाय

उड़ि-उड़ि बहुतो तूर से हिम-गिरि पर चल गेल
हिमालयक अछि शिखर तैं उज्जर दप दप भेल
जखनहि कन्याराशिमे राखथि पैर उठाय
तखनहि कन्यागत जकाँ सूर्यक मुख बिधुआय

तुला राशि मे जाय कय तौलत लोक प्रताप
सक्कत कतबा डाँड़ कय अयला कन्या-बाप
करथि सन्तकेँ कूहिकऽ चास-बास निज फैल
तनिका लगइत छनि मधुर नीमो चढ़ल करैल

फार थिपा रहलाह तैं तनिके लय यमराज
जइतहि पड़तनि पोन पर पूत न औतनि काज
लक्ष्मीकेर पर्याय भऽ के न होय उन्मत्त
तनिका साउङ जे करय सेह पुरुष अलबत्त

मेघक गुम्मी देखिकय सिहरय पीपर पात
यदि ई पाथर उझिललक पातक करत निपात
जा हेमन्त कुमार लग लगतनि वृश्चिक दंश
जैं वराह अवतारकेँ दुसय छुछुन्नरि वंश

14-10-76

एकरे लोक बिहाड़ि कहै छै

सुनै छिऐ दस लोकक मुँहसँ
एकरे लोक बिहाड़ि कहै छै।
पहिने दम सधने रहैत छै
दसो दिशा भयभीत भेलसन,
ऊमसमे कण्ठो सुखाइ छै
चित्त रहै छै तीत भेल सन,
सहसा प्रबल प्रचण्ड पवन
वन-उपवनकेँ झकझोरि दैत छै,
प्रकृतिक कोमल अंग-अंगकेँ
ठामहि पकड़ि मचोड़ि दैत छै,
बड़का-बड़का गाछ-वृक्ष सब एकर डरेँ बपहारि कटै छै।
एकरे लोक बिहाड़ि कहै छै।

देखिते-देखिते उन्नटि जाइ छै
बड़का-बड़का पड़ल गेँड़ सब
अड़रा-अड़रा टूटि खसै छै
मोटका-मोटका सबल फेँड़सब,
फूल, पात, ठहुरीक बात की,
जड़िसँ सीर उपाड़ि दैत छै,
सिंहक बच्चाजकाँ कते
दिग्गजकेँ पकड़ि पछाड़ि दैत छै,
ठाढ़े ठाढ़ चितंग भेलजे तकरे असली हारि कहै छै।
एकरे लोक बिहाड़ि कहै छै।

8-3-77

अपने गट्टी

अपने गट्टी भरि पनबट्टी, अनका संगें लट्टा पट्टी।
सबकेँ जाति भाइ टा सूझय
अपने हित देशक हित बूझय
तेँ सरकारी धन जे आबय
जत्तहि पाबय तत्तहि लूझय
चेला-चाटी बाटेँ-घाटेँ असुलि रहल बलजोरी बट्टी।।
जनता फाँकि रहल आश्वासन
नेता उत्सर्गथि अर्गासन
एमहर ढनढन कोठी भँड़ली
ओमहर उमड़ल उमड़ल बासन
अपना छहर देबाली घेड़ल, गामक लोकक टूटल टट्टी।।
नाम चलय सामाजिक न्यायक
काज मुदा सबटा अन्यायक
सेकुलर सेकुलर झालि बजाबय
जेहन बजनियाँ तेहने गायक
आन कालमे कट्टम-कट्टी, असल बेरमे सट्टम-सट्टी।।
धरता माँटि सकल हड़ताली
पड़तनि पिक्की, बजतनि ताली
अपने तँ बंबं करिते अछि
छै करैत बंबं घरवाली,
अपना मौजा जुत्ता ओकरा उँचकी एँड़ी वाली चट्टी।।
कतबो कूदथु फानथु बासा
आखिर बन्दे करतनि श्वासा
फुस फुस्टाव फुटावो फूटत
ई नहि टकसत रत्ती माशा
हुँकरि-चुकरि सब धरता रस्ता बेतन बिनु छूटनि छपटट्टी।।

किछु अछि सारिल ठोकल ठाकल
किछु ठहुरी आ किछु अछि बाकल
राजनीति केर कलमबागमे
सबकेँ चाही गोपी पाकल
नैतिकताक बात जे बजता से जयता सोझे मरघट्टी।।
जनसंख्याक बोझ अछि भारी
नर संहारक क्रम तैं जारी
बं बं करइत जे बम फोड़य
से सब थीक परम उपकारी
एहि बीच जे बाधा करथिन तनिकर झाड़ि देतनि कनपट्टी।।
अपराधी दल जबर्दस्त छै'
सिर पर ककरो वरदहस्त छै
तैं ने लोकक जान सस्त छै
आ पुलिसक बल भेल पस्त छै'
अवसर पबितहि एस.पी.ओ. कैँ तोड़ि दैत छै ठामहि नट्टी।।
जनिका पर छल बहुतो आशा
से बहरयला फोंक बताशा
अगड़ाही अछि पसरल चौदिस
देखथि ठाढ़े ठाढ़ तमाशा
एके लाड़निसँ सब लाड़ल क्यो ने अछि ककरोसँ घट्टी।।
भगवानो छथि चुप्पी सधने
महादेव से गुम्मी लधने
ब्रह्मा बाबा ततमत जे
छाड़ि कमण्डल राखी बन्हने
लक्ष्मी माता सरस्वतीकेँ सहजहि आइ पढ़ाबथि पट्टी।।

20-1-2000

'तामस कथिक थिक'

के कहैत अछि खाली महगी बढ़ल जा रहल
सौंसे देश बढ़ल जाइत अछि उन्नत पथ पर
करितहु ई परिवार नियोजन जनसंख्या की थोड़ बढ़ल अछि?
जनसंख्या बढ़ि रहल, किए ने उन्नति कहबै?
भावी कर्णधार सभहिक झोटकी बढ़लनि अछि
वेल-बटम केर घेरा क्रमशः बढ़ले जाइछ
नरसँ अधिक प्रभाव स्वतः नारीक बढ़ल अछि
स्वतन्त्रता सेनानी संख्या वृद्धयुन्मुख अछि
जिला, डिवीजन थाना सहजहि दोगदाग धरि
लोकसभाक सीटमे सेहो वृद्धि भेल अछि
झोंटा-झोंटकीमे अतिशय मेल बढ़ल अछि
जहिना अद्‌भुत कट दाढ़ीओ मोछ बढ़ल अछि
तहिना सबतरि हुलकल फिरइत अछि स्कूटर सब
सड़क सड़क पर बसक भीड़ से बढ़ल गेल अछि
आ प्रतिबसक माथ पर लोकक बृद्धि निरन्तर
एक मंजिलक बस चलइत अछि बनि दुमंजिला
अहदी लोकक संख्या अपरम्पार बढ़ल अछि
बलात्कार अपहरण कदाचित कतहु होइत छल
आब एकर संख्यामें से विस्तार भेल अछि
घिया-पुताक खेलौना से हथियार भेल अछि
कते गनायब, तस्करीक व्यापार बढ़ल अछि
देशक माथ अपार कर्जहुक भार बढ़ल अछि
ग़ाम गाम चौबट्टी पर बाजार बढ़ल अछि
नीचासँ ऊपर धरि भ्रष्टाचार बढ़ल अछि
बाल असलजे घटब बढ़ब संसारक क्रम छै
जते बढ़ल नहि भाग ततेक विभाग बढ़ल अछि
एते बढ़ल सब वस्तु तकर परवाहि न ककरो
तखन बढ़ल जँ महगी तँ तामस कथीक थिक?

12-3-77

पाकल फल टटका

बात अछि कनेके टा,
मुदा पैघ लोक केर
तैं एकरा पेटेमे कृपया पचायली।
बहुत लगक हॉलमे आयल रहै एक खेल
नीकोमे नीक, बुझू 'हाइओमे हाइकलास'
छौंड़ीसँ छौड़ा धरि, युवतीसँ बुढ़बा धरि
लाज-धाख छोड़ि छाड़ि
उमकि उमकि नाचल छल
डान्सक तँ फिल्ममे उजाहि आबि गेल रहै।
कूदबसँ फानबसँ
नाचब आ गायब सँ अतिशय सिनेह रहनि
'मैडम'तैं चाहथि जे देखी एकरा अवश्य।
साहेबकैं चारि-पाँच दिन तँ समाद गेलनि
छठ्ठमदिन अपनेसँ जाकऽ कहलथिन जे
आइ किच्छु बीतिजाय
देखबालै जाय पड़त।
साहेबकैं सोझाँमे फाइलक पहाड़ छलनि,
हाफी करैत लैत दीर्घश्वास बजला–
की एहूसँ बेसी आवश्यक ओ काज अछि?
नखरो कयलाक बाद
साहेबकैं टससँ मस होइत जखन देखलनि नहि
पैर अपन पटकैत
देयोरेकैं संग लगा
चलि पड़ली मैडम पाँव-पैदल
ओहि हॉल दिस
ताहिबात केर भेलनि एतबे नतीजा
जे होइतनि तँ पुत्र मुदा भेलथिन भतीजा।
अपने किरदानीसँ खयलनि ई पटका
पाश्चात्य सभ्यताक पाकल फल टटका।

19-3-78

हाय रे कपार!

केहन छलै गुमकी, आ केहन छलै ताप?
बाप बाप करय लोक देखि ओकर दाप
कोना सुखा रहल छलै लोक केर कण्ठ,
देशक भगवान कोना भेल छला चण्ठ?
देशक भरिक प्रान कोना छलै अकबकाइत,
मुँह-पुरुषो लोक डरेँ छला सकपकाइत।
केहन केहन कहबैका बैसल दम साधि,
जकड़ि लेने रहै जेना एक रंग व्याधि।
एक रंग हवा-पानि, एक्के रङताल,
अपने लै छोटका सँ बड़का बेहाल।
भेल सकल सुविधा किछु मुट्ठी मे बन्द,
तखन कोना उदित होइत कतहु कोनो छन्द।
देशक बलिदानी सब राति-राति जागि,
फाँड़बान्हि भिड़ल छला अन्न-पानि त्यागि,
चिनगी सुनगयबा मे गेल छला लागि
तखन जाय पजरि सकल, क्रान्ति केर आगि।
कते उठल बिड़रो, कतेक ने बिहाड़ि।
तखन राष्ट्र सकल सकल द्वन्द्वकेँ पछाड़ि।
जागि गेल गर्व हमहि थिकहुँ मूर्त्तिकार
लेब बना एकसर पुनि दोसर संसार।
माँटिक लऽ थुम्हा हम गढ़लहुँ जे मूर्ति
ताहीसँ भेल सकल साधनाक पूर्ति।
गढ़लहुँ गणेश, मुदा वानर बनि गेल
हाय रे कपार! हाय विधिनाक खेल।

10-12-97

प्रलोभन

आः अतूः आः आः
जनता भिन्ने तवाह,
नेता अपने अवाह,
आः अतूः आः आः।
कौरा नहि हाथ, तखन
व्यौरा लऽ करते की,
फेकि देल पाते पर
लड़ि-कटिकऽ मरते की?
बुढ़िया विषपिपड़ी
आ छौंड़ा तड़ङाह,
आः अतूः आः आः।

20-2-80

उगत कोना चान

एक भाग शिशिरक ई बरसि रहल ठार,
दोसर दिस राति भरल घोर अन्धकार,
सत्यकेर सूर्य डूबि गेल क्षितिज पार,
मुँहदुस्से सभहिक अछि सबतरि संचार,
कृष्ण पक्ष थीक तखन उगत कोना चान
कखन होयत प्रात तकर कहत के ठेकान।

23-2-80

चुरु भरि पानि

भाषा संस्कृति पर प्रहारकऽ
घूमि रहल पुनि छाती तानि,
नीचाँ सँ ऊपर धरि शिक्षाकेँ
कयलक सब ठाम उबानि,
पैर तरक धरती धसले अछि
ऊपर धीपि रहल अछि चानि,
तैं मिथिलावासीकेँ चाही
केवल आब चुरू भरि पानि।

3-7-80

कहने रहथि नेताजी

जाहि रूपक जीवन हम
एखन धरि जीलहुँ अछि
से कोनो सर्कसक
एक पहिया साइकिल थिक।
पैडिल तँ छैक मुदा
ब्रेकक गुंजाइश नहि,
सीट लचकदार, मुदा हैण्डिल निपत्ता।
जगहे ने छैक तखन घण्टी लगतैक कतऽ?
चलबालै सड़क, मुदा
तामल धनखेती वा ताहूँसँ बत्तर।
ताहू पर भीड़-भाड़-जेना कोनो मेला हो,
बाट चलनिहारकेँ से चलबाक लूरि नहि,
कोन वाम, कोन दहिन
तकर किछु विचारे ने।
देहक सन्तुलने पर साइकिलकेँ
सन्तुलित राखब छै कते कठिन
अपने अनुमानि लियऽ।
तैयो ट्रक, ट्रैक्टर, बस, टेम्पू तर पड़लहुँ नहि
तकरो किछु कारण-विशेष
मात्र एतबे जे
'फ्रीह्विल' मे ट्रिक कोनो तेहने लगौने छी।
बाटेबाट ठाढ़े-ठाढ़ टोका नमस्कारे पर
कहने रहथि मुस्कुराइत
एक दिन नेताजी।

20-7-80

कहने रहथि मन्त्रीजी

हुनका पुछलियनि,
कहल जाय अपने कैँ
जे किछु मनोरथ छल
एखनहु धरि पूर भेल
आ की किछु बाँकी अछि?
बजला–
मनुक्खक तँ तृष्णा अनन्त छैक,
ककर पूर भेल छै जे हमरे सब
पूर होयत?
बात रहल सन्तोषक
सैह करऽ पड़ैत छैक।
तैयो आकांक्षा बस एक मात्र मनमे अछि।
इच्छा अछि–
मुइला पर मृत्युक समाचार
रेडियो वा टी. भी. पर की देतैक
सूनि लितहुँ,
देखि लितहुँ बौआकेँ
हमरा मुइलाक बाद
कोन-कोन रूपेँ
के मदति की करैत छथिन
सान्त्वनाक बदलामे।
सोफा पर ओठङ्ल सन,
चिन्तामे डूबल सन,
आँखि दुनू मुनने
ई कहने रहथि मन्त्री जी।

20-7-80

ई आश्चर्यक बात न कोनो

ई आश्चर्यक बात न कोनो
आब एहन भ्रम भेल करै छै,
शत-सहस्त्रनहि,
उदाहरणमे आइ करोड़ो भेटि सकैए।
लोक बुझै छै - मुइल सड़ल अछि,
हम अपनाकेँ मानी जीवित।
जीवन्तक जे लक्षण सब छै
श्वास तथा प्रश्वास प्रक्रिया प्रथमे लक्षण
से चलिते अछि।
दोसर लक्षण थिक भोजन
से डँड़ाडोरि कऽ ढील तण्डुल-ध्वंस करै छी।
लोभ-मोह-मत्सरता सबमे अगुअयले छी।
गतिक प्रश्न अवशिष्ट रहल
से गाछ-वृक्ष ओ लता-गुल्म सब
कहाँ चलैए,
तँ की ओ सब मुइल-सड़ल अछि?
फूल, फऽडमे ककरोसँ पछुआयल नहिए।
गति नहि अछि, दुर्गति तँ अछि ने?
दुर्गतिओमे 'गति' पद छैके
प्रश्न रहल उपसर्गक, से तँ
जेहन करब संसर्ग
रहत उपसर्गो तेहने।

तँ विचारि कऽजँ देखी
तँ बूझि पड़ै छै - छी तँ जिबिते,
ग्लानि-गरल जे भेटि रहल अछि
उठा-उठा सबटा छी पिब्रिते।
एहने भ्रममे पड़ल
मैथिली-भाषी
मिथिलावासीकेँ
क्यौ देखि सकैए।
बूझि कण्ठकेँ बीहरि
बिषधर पैसि गेल अछि,
बाहरसँ मोटका शीशा वाला चश्मा अछि
भीतर दूनू आँखि निपट्टे बैसि गेल अछि।
फेर गाल पर पाँचो आङुर निखरि उठल अछि
तथा नरेटी पंजामे सकसका रहल अछि।
तैयो अपनाकेँ
बुझैत छी जे
छी जिबिते,
ग्लानि-गरल
आबहु जे भेटत
रहब उठा कऽ एहिना पिबिते।

14-3-81

दरभंगा नगर निगम

नगर पालिका बनल निगम
आब नागरिककेँ की गम।
सड़के पर नाली संगम
सौंसे नगर करय गमगम।।

बाट चलैत पड़य जँ थाल,
करू ताहि सँ शोभित भाल।
अपन भाग्यकेँ मानि विशाल,
तकरा करिया बूझि गुलाल।

निगम कृपासँ चन्दन लेप,
मानि लगाउ पचासो खेप।
रहू प्रशासनसँ निर्लेप
अपनाकेँ मानू-'छी ढेप'।।

सावधान रहितहुँ जँ ठेस
लागय, बुद्धि बढ़ैछ विशेष
मानी, नहि मन आनी क्लेश
तुरत कही-जय मिथिला देश।।

थिक मिथिलो भारतकेर अंग,
दिल्लीसँ तैयो की संग?
पटना पट, नाके बदरंग
तेँ दरभंगावासी दंग।।

पछिला चक्का उठल फटाक,
बुझनुक छी तेँ उतरि चटाक
मिस्त्री लग चल जाउ खटाक
छीकू बैसि पटाक-पटाक।।

रौरव नरक कहय परचारि
दरभंगासँ मानल हारि
की तकैत छी आँखि निड़ारि
नगर भरिक सौन्दर्य निहारि?
ककरा पर करबै अभिरोष,
करू प्रशासन पर नहि रोष
मानू अपन कपारक दोष
खाली छै सरकारी कोष।।

नेता सभक करू जयकार
जे चलबै छथि ई सरकार
अपनालै 'सर' कैँ छनिकार
जनतासँ पुनि की दरकार?

माथ रहत हल्लुक

नीक कयल हम सब
जे पहिनेसँ सोचि लेल।
घरमे जँ रखितहूँ तँ जल्ला-मकड़ा डर,
पिलुआ लगबे करैत,
नष्टे ने भऽ जाइत।
दानो जँ करितहुँ
तँ एहन दान लेनिहार भेटबो करैत कतऽ?
अपने अजीर्ण एखन दुनियाँ कैँ भेल छैक।
तखन किए दान लऽ कऽ
आफद सिर थोपि लेत?
मानिलियऽ जँ कदाच
याचक भेटबो करैत,
दाताकेँ आइ-काल्हि यशो कतहु दैत छैक?
महगी कतबो रहौक
वेचबो जँ करितहुँ तँ
दामे कतेक दैत?
भुस्सा तँ कोनहुना
भुस्सा थिकैक किने,
माल-जाल खाइत छैक
मानि लियऽ बडदेकेँ दैत छिऐ खाय लेल
गाड़ी ओ हऽर मे तँ जाकऽ बहैत अछि
सैरियतो दैत अछि।
गाय महिंस खाइत अछि तँ
दूध बना दैत अछि।
किन्तु हमर अहाँक 'अकिल'
माल-जाल खा सकैछ?
कुकुरो बिलाड़ि–
कहू एहिसँ पोसा सकैछ?
एहन जे बेकार वस्तु
माथ पर उठौने सब

व्यर्थ ने घुमैत छलहुँ।
नीक कयल जे
जुमाय खत्तामे फेकि देल।
माथ रहत हल्लुक
तँ सैह कोन थोड़ थीक?
ई यदि नहि करितहुँ तँ
लोकतन्त्रकेर सीर
माँटि ने पकड़ि लितैक,
आइ धरिक कयल-धयल
सबटा विनष्ट होइत।
एखने ने नीक छैक,
फुनगी छै नीचाँ
आ जड़ि एकर ऊपर छै
''ऊर्ध्वमूल मधः शाख''
अपने भगवान कृष्ण
गीतामे कहने छथि।
फुनगी पर ठहुरी सब पातर ने होइत छैक
जड़ि मोट रहले पर गाछ ने टिकैत छैक।
लोकतन्त्र केर जड़ि दिल्लीमे देखि लियौ।
नीक कयल हम सब जे
अपन-अपन अकिलकेँ
जोरसँ जुमाय बीच खत्तामे फेकि देल।
नहि तँ विचार करु
आनलोक अपना की
अनको समटैत अछि।
हम सब छी
कुत्तोंकेँ बीचोबीच फाड़ि फाड़ि
ईर्ष्यें नाङड़ि कटाय
हिस्सा बँटैत छी,
अपने सुनगाय आगि अनका डँटैत छी।

25-1-87

भोजन विधान

मिथिला प्रदेशमे बसनिहार
हम दालि भात नओ टा तरकारी खयनिहार,
तरुआ-भुजुआ, लटपटी-झोर, सन्ना-चोखा,
बड़-बड़ी तथा पापड़-अँचार,
ककरो दर्जा नहि छोट पैध,
अपना अपनामे सब होइछ स्वादिष्ट परम,
सब रान्हि-बाटि लागय सँचार
पल्था लगाय बैसी, समान रुचिसँ पाबी भऽ निर्विकार।
छै किन्तु बनयबा केर सभक विधि भिन्न-भिन्न
कोनोमे गरम मसाला तँ कोनोमे सरिसो-आमिल
आ मेरिचाइ पुष्ट, कोनो बिनु घृतेँ न बनि पाबय,
कोनो सरिसोक शुद्धतेलहिमे चहटदार।
जँ भम्हुर आगिमे पका सकी तखने चोखा,
सन्नाक हेतु उसिनब आवश्यक होइत छै,
कोनहुमे मेथी कोनहुमे जीरक फोड़न,
कोनहुमे पँचफोड़ना चाही, उड़ि जकर सुगन्ध
परोसियाकेर पनिछाय दैत छनि तुरत जीह,
अस्तित्व हमर सबसँ फराक
हम ऐंठ पात नहि चटनिहार
छी दालि भात नओटा तरकारी खयनिहार।
कोनो भनसीया बिनु हीङ्क तरकारी करत
कदीमाकेर, तँ अप्टु कहाओत मड़नीमे,
कोबीक संग क्यौ कोना अदौड़ीकेँ फेंटत?
भाँटाक यार थिक मूर, अदौड़ी प्राण सखी
से किन्नहु कोबी संग न मेजन बनि सकैछ

छै स्वाद फराक जेना सबहुक तहिना
रन्हबाक विधानो छै भिन्ने प्रकार।
व्यक्तिक रुचि होइ छै अपन-अपन,
तेँ अपने रुचिहिक अनुपातेँ सब खइतो अछि,
तैयो सम्मिलिते रूप सभक कहबय सँचार
हम दालि भात नओटा तरकारी खयनिहार।
कबकब होइत अछि ओल तथा अरिकोंछ, मुदा
जम्बीरी नेबो गारि करी कबकबी दूर,
होइत अछि तीत करैल तथापि
बनय तकरे रुचिगर भरुआ,
पटुआक झोरमे फोड़न पड़य जमाइनिकेर
तँ चीखक इच्छा करथि जमाय मनाइनि केर।
भोजनमे जहिना षट्रस केर महत्त्व होइछ
काव्यहुमे नव रस आनन्दक उद्रेकक साधक तत्त्व होइछ।
जेँ पञ्च तत्त्वसँ निर्मिति हम सब देही छी तेँ पञ्च देवतोपासनाक
सब स्नेही छी
अछि यैह विविधता
भारतीय जीवनकेँ परिचित रखनिहार
हम दालि भात नओटा तरकारी खयनिहार।
वैयक्तिक रुचिमे भिन्नताक गुण
तँ सबमे नैसर्गिक अछि,
तैयो सबकेँ मिलले पर ई कहबय समाज,
नहि कतहु परस्पर अछि विरोध,
प्रतिशोधक चर्चो करब महाग अनर्गल थिक
तेँ स्वार्थक वश यदि क्यौ विरोध उत्पन्न करय
तँ तकरा मुँह पर सब मिलि कारिख पोतनिहार
हम दालिभात नओटा तरकारी खयनिहार।

24-5-88

व्यर्थ न होयत एते बलिदान,
साक्षी छथि दिनकर भगवान। श्रीराम जयराम
अपन-अपन अर्पित कय प्राण,
रखलनि जे हिन्दुत्वक मान। श्रीराम जयराम

सद्यः मुक्ति पाबि से लेल,
जीवित जनकेँ शिक्षा देल। श्रीराम जयराम
थिक नश्वर ई मनुज शरीर,
चलै चलू सब सरयूतीर। श्रीराम जयराम
जननी जनक दुहू जन धन्य,
जे-जन्मौलनि भक्त अनन्य। श्रीराम जयराम
युग-युग अमर रहत जे नाम,
ताहि अस्थिकेँ कोटि प्रणाम।
श्रीराम जयराम जयजय राम।
जयतु जानकी पति श्री राम।।

24-11-90

बिरानबेक पूस

पलटि पुनि पहुंचल पापी पूस
रौदी देखि डरैं बीहरिमे डंड घिचैए मूस।

गामक गाम उजाड़ भेल अछि,
तै पर ढिठगर जाड़ भेल अछि,
नार पोआरक नाम कतहु नहि
दीनक राति पहाड़ भेल अछि।
गोनड़ि धरि नहि जुड़य, कतयसँ आनत सीरक, धूस।।
माल-जाल सब कंक भेल छै,
सभक प्राण अभिचंक भेल छै,
भगवानक नामो पर चारू
कात आइ आतंक भेल छै।
नरकहुमे यमदूत कहाँदनि माङि रहल छै घूस।।
बाधक बाध पड़ल अछि परती,
ठनठन बाजि रहल अछि धरती,
कर्जक भारैं हकहक करइत
ई सरकारे की की करती?
ककरा पापैं रहल बरख भरि बनल मेघ कंजूस।।
दू-दू सय मन जे उपजाबय,
तकरो घरमे बं-बं बाजय,
दूसय जे किनि खैनिहारकैं
नयनकोर तकरो भरि आबय
हाहाकार मचल अछि चौदिस की कोठा की फूस।।

पोखरि-झाँखड़ि सब अछि चटकल,
कोसी-कमला गंडक सटकल,
सबतरि घोर अन्हार लगै अछि
लोकक प्राण कण्ठ छै अँटकल।
कोन प्रकारेँ साल कटत तेँ लोक भेल मनहूस।।
जे सरकारी दया बँटैए
अस्त व्यस्त दिन राति खटैए
ऊपर ऊपर दैछ मोलम्मा
भीतर भीतर कोँढ कटै'ए।
भरिदिन तकरे नेना-भुटका चूसय लेमन चूस।।
कर्ज सधाबय लै पुनि कर्जा,
लेबामे जकरा नहि हर्जा,
अपने जे अछि खाट पकड़ने
करत कोना अनकर परिचर्या।
पेट भरत नहि रैली कयने, सजने पैघ जुलूस।।
सबसँ सबकेँ सब अछि टपने,
भरय बखारी सब मिलि अपने,
वादे भेल समाज ततयकी
नाम समाजेवादक जपने?
बुधियरबा सब अपन अपन घर सजबय झाड़-फनूस।।
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस।

26-12-92

वर्त्तमान परिदृश्य

युगक चक्र घुमिते रहैत अछि देखू बैसि तमासा,
रसमलाइ भऽ बासि गन्हायल, अछि स्वादिष्ट बतासा।
हालत देखि मृदंग दंग अछि, कड़कि रहल अछि ताशा,
झुला रहल प्रतिभाशालीकेँ आशा तथा निराशा।।

घोड़ा धोबी घाट धरत आ गदहा रेस खेलायत,
निट्ठुर दूध दहीसँ मक्खन सहजहि आब बिलायत।
रोपल रहत बबूर ताहिमे चम्पा फूल फुलायत,
बाबू भैया सभक मोंछमे मटियातेल मलायत।।

हाकिम बनि कुर्सीकेँ छेकत सब भुसकौलक टाड़ी,
शिक्षक बन्धु पढ़ाबय औता पिबि भरि लबनी ताड़ी।
खेड़ही रहत विखिन्न, हविष्य कहाओत आब खेसाड़ी,
वनबिलाड़ वनराज बनत आ सिंह नुकायत झाड़ी।।

पित्तड़ि लग सोनाक मोल क्यौ नीक लोक नहि मानत,
लाठी रहतै जकरा से भरि गामक महिंस दफानत।
पाछाँ डाँका दैत रहल पहिने लऽ लेत जमानत
से बुधियार बनत संसद मे जते जोरसँ फानत।।

जातिवाद निर्मूल करक हित जातिक लैछ सहारा,
अन्यायेटा करय, लगाबय जे सब न्यायक नारा।
जे गण्डा-गाही नहि बूझय, से पढ़बैछ पहाड़ा,
खौंझायल अपना पर अनकर पितरक कोड़य सारा।।

जतय शिवक छाती पर रखने पैर ठाढ़ छथि काली,
जतय समन्वित देव-शक्तिसँ दुर्गा खप्पर वाली–
अवतरली चण्डी-चामुण्डा नचली दऽ दऽ ताली
ततय लोक चाहैछ देशकँ हम न्यूयार्क बना ली।।

एही ठाम अर्द्धनारीश्वर रूप भेल छथि भोला,
जनिका लै नित्तह पीसै छथि गौरी भाङक गोला।
जे अछि चाहि रहल करबय पति-पत्नी बीच दुगोला,
तकर माथमे की गोबर छै भरल अठासी तोला?

बलिदानीक रक्तमे सानल ई स्वतन्त्रता आयल,
पाँचो दशक न बीतल तनिकर स्मृति पर्यन्त धुँआयल।
ठोर-ठोर पर फुफड़ी, देशक कण्ठक सेप सुखायल,
हास्य कतय सँ आनब? करुणे कण-कणमे सन्हिआयल।।

27-8-94

यैह थिकै गनतन्त्र

आम चुनाव तते होइछ जे आम फड़ब अछि बन्द,
आम लोककेँ डिब्बाबन्दे भेटि सकत आनन्द।
आम सभामे के नहि फटकथि क्विंटल भरि आश्वासन,
आम बात एतबे जे कहुना भेटि जाय सिंहासन।
क्यौ हल्ला गुल्ला करबेकेँ बना लेलक हथियार,
बीच बाट पर फोड़ि रहल अछि प्रतिपक्षीक कपार।
चलय राजनीतिक से गोटी जे समाज केँ तोड़य,
पाखण्डीक विरोधी जा कय तकरो भण्डा फोड़य।
एकक नहि, सम्पूर्ण समाजक बुद्धि छैक भसिआयल,
तेँ देशक सब प्रमुख समस्या छै लटकल लसिआयल।
आँखि मूनि ई वर्ग प्रबुद्धक पच्छिम दिस रुखि कयने,
परम्परागत सुगम बाटकेँ छोड़ि कुबाटे धयने।
पुरातत्त्ववेत्ता समाजमे बातक बजरल मारि
क्यौ इतिहासक धूर छँटै छथि, क्यो तोड़ै छथि आरि।
आदि भूमिवासीकेँ बहुतो कहि रहलाह विदेशी,
कोन आत्म-वंचना एहिसँ भय सकैत अछि बेसी?
अनके नाङड़ि धरब जीवनक मानि लेल उत्कर्ष,
बिसरि गेल जे विश्ववन्द्य कहियो छल भारत वर्ष।
नेतृ वर्ग तँ सहजहि अपने छथि सब बुद्धि-निधान
कल्ला नहि अलगाय सकै छथि केहन केहन विद्वान।
सूत्रधार कहबथि, से मुट्ठीमे धयने छथि टीक,
टेलीफोन गाम धरि पहुँचल, चिन्ताआब कथीक?
जूड़ि सकै जकरा नहि रोटी पर चुटकी भरि नोन,
तकर परम उपकार करत ई गामक टेलीफोन।
टेलीवीजन नाच देखाबय, बक्सा गाबय गीत,
उचिते शास्त्र-पुराणक चर्चा एकरा आगाँ तीत।
सतभतरी थिक ई स्वतन्त्रता जनतन्त्रक छै पालिश,
बीच बाट पर मारत, ककरा लग जा करबै नालिश?
जकरा सब जनतन्त्र कहै छै, यैह थिकै गनतन्त्र,
बम-बारूद अमार, चलत नहि मारण-मोहन मन्त्र।
अहाँ थिकहुँ वोटर कोटरमे बैसू, खुद्दी फाँकू,
साढ़े तीन हाथसँ बेसी नहि अपनाकेँ आँकू।

16-12-94

दोहाष्टक

चऽ लऽ वर्णक संग जैं आलू शब्दक सन्धि।
भेल फराक फराक तैं पसरल विकट सुगन्धि।।
कृष्ण कहाबय लै विकल आ करनीमे कंस।
निर्माणक लऽ नाम पुनि करय महाविध्वंस।।
पैसि कमल दहमे उरग छोड़ि रहल फुफ्फकार।
मूड़ी थकुचक हेतु तैं लोको अछि तैयार।।
अन्नक होय अजीर्ण तँ पाचक अछि पचबैत।
बुद्धिक किन्तु अजीर्ण तँ अछि विनाश रचबैत।।
जेडाबामे गर्रगों कहियो रहय करैत।
उड़न खटोलापर चढ़ल से अछि उड़ल फिरैत।।
मगजी नहि उनटैक तँ सैह थीक आश्चर्य।
चोर किए नहि कहु करय साधु सभक कौचर्य।।
दलसँ दल फुटि भेल दू तैं दलदल से भेल।
धसल पैर कछमछ करय नरकहु ठेलम ठेल।।
प्रकृति रसातल गेल आ विकृति बढ़ल आकण्ठ।
संस्कृति काहि कटैत अछि कण्ठ पकड़लक चण्ठ।।

28-2-95

बीतत विकट विभावरी

महिंसिक पीठक ठेला जकर नितम्ब पर
सेहो वंशी टेरय आइ कदम्ब तर।

भाँटि करैए स्पर्धा चम्पा फूल सँ
बाँसक चचरी सेहो पक्का पूलसँ।

जखन बिलाड़िक भाग्यैं टूटल सीक छै,
मुसरी सबकैं चिन्ता तखन कथीक छै?

चारूदिस कौआक जखन अनघोल हो,
ताहि बीच कोइलीक कहू की मोल हो।

आइ फेर बनवास भेल छनि रामकैं,
रावण भूजि रहल तैं गामक गामकैं।

कृष्ण मानि कय बहुतो पूजय कंसकैं,
उचिते लागल छैक छगुन्ता हंसकैं।

कुड़हरि उछटि रहल अछि बाँसक ओधि पर,
हमर अहाँक नजरि अँटकल अछि धोधि पर।

लोकतन्त्रमे एहन तमाशा होइत छै,
रसगुल्लोसँ नीक बताशा होइत छै।

विकसत शतदल बीतत विकट विभावरी,
हम बुड़िबक जनता ता चीखी राबड़ी।

30-3-95

भेटल छै अधिकार

ककरहु पर किछु बन्धन नहि अछि, सब छी परम स्वतन्त्र,
तैं ने एकरा सब कहैत छै लोकतन्त्र जनतन्त्र।
भने महग हो अन्न वस्त्र, सस्ते अछि बारूद-बम,
तैं समाजमे बुझि पड़ैछ नहि क्यौ ककरोसँ कम।
भैंड़ा-महिषा कानि एकसँ दोसर सदिखन राखय,
जकरा सुतरै हाथ जखन से तकर फलाफल चाखय।
उचिते झोंकल गेल चूल्हिमे तथाकथित मर्यादा
छला अबूझ, बकुटि तैं रखलनि दादा ओ परदादा।
आब आधुनिक दृष्टि फुजल अछि, आबहु सब मिलि चेती,
बिनु खाद्हु दुन्ना उपजै छै भ्रष्टाचारक खेती।
बलात्कार अपहरण करय से ने जकरा छै लूरि,
मुँहदुबरा फुसिए निन्दा कऽ करय अपन मुँह दूरि।
देखि एहन उत्कर्ष मनुष्यक श्वान जाति अछि लज्जित,
अपहरणेक कलामर्मज्ञक भेटत भवन सुसज्जित।
अजा-पुत्रकैं लजा रहल आ बजा रहल अछि गाल,
तैं नैतिकता रूपी सीता चल गेलीह पाताल।
लाज-धाख आबहु जे राखय से थिक मूर्ख चपाट,
निर्लज्जाक सकल सुख-सुविधा हेतु फुजल सब बाट।
जँ बुधियार कहाबय चाही गर्जू कूदू, फानू,
चोरि, डकैती, घूस जेना हो, बगुली टा भरि-आनू।
धर्म अधर्मक गप्प करय तकरासँ रहू फराके,
भूमण्डलीकरण केर युगमे पूछै छै ककरा के?
सत्य असत्यक कथा फूसि थिक मूल वस्तु थिक भोग,
हिंसामय सृष्टिक रचनामे थीक अहिंसे रोग।
नाम जनिक बेअन्त तनिक ई परम कारुणिक अन्त,
नतय किए ने कहू भिण्डरावाला कहबय सन्त?
तैं अपना रक्षा लै साधारण जन बान्हू कच्छा,
जन प्रतिनिधि आ अफसर सब लै छनिहें कड़ा सुरक्षा।
लोक? लोक थिक जन्मत मरत, अपन कर्मक फल भोगत,
किन्तु समाजक शीर्ष लोककैं जनते ने संजोगत!
जनते लै जनतन्त्र व्यवस्था, जनते लै सरकार,
तैं जनतेकैं कष्टो काटक भेटल छै अधिकार।।

20-7-95

....तखन वसन्तक की अभिनन्दन?

टूटल सब मर्यादा-बन्धन
तखन बसन्तक की अभिनन्दन?
एक समय छल जहिया
राजा मानल जाथि सदेह देवता
आ राजा देवते जकाँ
करितो छलाह जनताकेर पालन,
अपन प्रजाक व्यथाकेँ अपने व्यथा मानि
पुनि करथि निवारण।
तेँ तहिया यदि ऋतु बसन्तकेँ
भेटि गेलनि ऋतुराजक आसन
तँ उचिते छल।
किन्तु आब सब किछु अछि बदलल।
राजतन्त्र रहि गेल कहाँ जे
आबहु ई ऋतुराज कहाबथि?
आइ व्यवस्था उनटल-पनटल।
राजतन्त्रमे जे दुर्गुण छल
से कतगुन भेलोपर सम्प्रति
लोकतन्त्र अछि नाम धरौने।
आजुक लोक समाजक जकरा
मानि रहल अछि युग परिवर्त्तन।
जकरा वर्त्तन परिलगलै से फानि रहल अछि,
जकर लुटयलै वर्त्तन से सब कानि रहल अछि,
जनसाधारण उनट-पनटकेँ
युग परिवर्त्तन मानि रहल अछि।

x x x

परिवर्तन सृष्टिक स्वभाव थिक,
बिनु परिवर्तन चलि न सकय ई,
किन्तु एक परिवर्त्तन जे नैसर्गिक होइछ
कतहु ताहिमे हो न व्यतिक्रम।
ग्रीष्म तपाबय जखन धराकैं
वाष्पीभूत भेल जलकण सँ साजि मेघदल
उतरय पावस, करय धराकैं सार्द्र
शरद पुनि वसुन्धरा पद पर बैसाबय।
दोसर परिवर्त्तन हो कृत्रिम,
कृत्रिम परिवर्त्तन सब किछुकैं
घोंकि-घाँकि कय छोड़ि दैत अछि,
बढ़ल चरण शिखरक दिस
तकरा घीचि गर्त्त दिस मोड़ि दैत अछि,
कृत्रिम परिवर्त्तन समाजकैं
मूड़ी पकड़ि ममोड़ि दैत अछि।
आइ मनुष्य प्रहार करय सोझे निसर्ग पर
सकल समाजक एक वर्ग पुनि अपर वर्ग पर।
लड़ि-लड़ि प्रकृतिक संग मनुज
दय रहल ध्वंसकैं आइ निमन्त्रण,
जल-थल-गगन-पवन धरि-सबतरि
क्रमशः बढ़ले जाय प्रदूषण।
सौमनस्य जे छल समाजमे
वैमनस्य दिस ससरि रहल अछि
समताकेर नाम पर जग भरि
घोर विषमता पसरि रहल अछि।
कोकिल रहय वसन्तक शोभा
से रन-वन घुमि नोर बहाबय,
काक किन्तु संगीत सभामे
आजुक स्वर सम्राट कहाबय।

x x x

संकरबीज आब उत्पादनमे
न ऋतुक परवाहि करय किछु
हमरा फुलबाड़ीमे शरदक तीरा फूल
फुलाय रहल अछि,
फागुन थिक तैयो बजारमे
कटहर खूब बिकाय रहल अछि।
संकर अछि संगीत, कला सब,
तखन किएक न हो ऋतु संकर?
संकर लोक, सभ्यता संकर
संकर अछि संस्कार स्वदेशक,
भाषा संकर तैं साहित्यो संकर
व्यर्थ दोष परिवेशक।
आब वसन्तक गुण जे गाओत
कवि नहि चारण पदवी पाओत।
बाल्मीकि की, कालिदास की,
विद्यापति-गोविन्द दास की
आजुक संकर बनल कसौटी पर
कसलासँ ठहरि सकै छथि?
साहित्यक सिंहासन बैसल
महाधुरन्धर सैह बकै छथि।
वातावरण भेल जाइत हो डेग-डेगपर जतय भयंकर
संकरभय सब वस्तु ताहिमे हमर आश केवल शिवशंकर।
जे वसन्तकेँ पाबि मुदित मन शैलसुतासँ परिणय कयलनि,
त्यागि समाधि, सकल सुखसाधक
फेर गृहस्थक आश्रम धयलनि।
तैं हे हमर वसन्त!
आब राजा सबहिक छनि प्रीवीपर्शोबन्द।
तदपि अपन गुणगान सुनक अभिलाषा हो
तैं ठोकि-ठठा कय पकड़ू पाटी
जे कोनो हो मनपसन्द

जद, बसपा, सपा, माकपा, सजपा,
जपा, भाजपा तथा भाकपा
वा बुढ़िया कांग्रेसे भावय, जे मन मानय,
नाम अहींक उचारि जाहिठाँ
गदहा नाचय, घोड़ा फानय,
वनमुर्गी, बुढ़बा बगुला सब
एक अहींक सुकीर्ति बखानय।
जनिक नाम पर कविता रानी
करथि सदा करुणामय क्रन्दन
अहाँ करू तनिकर पद-वन्दन
ओ अहाँक करता अभिनन्दन।
टूटल सब मर्यादा बन्धन, तखन बसन्तक की अभिनन्दन?

25-2-96

छोट खिखिरकेँ मोट नाङडि

जोतल गेल एक गाड़ीमे भेंड़ा महिषा संग,
साप छुछुन्नरि चढ़ल ताहि पर जमा रहल अछि रंग।
पहिया छोट पैघ तँ छैके, कान्ही छै बेमेल,
जूआ पर बैसौलक सब मिलि बहलमान बकलेल।

रासि पकड़ने छै क्यौ तेसर, गाड़ी छैक उलार,
सौंसे सड़क कटारि, ताहि पर कतहु चलैछ पलार।
प्रजातन्त्रतँ धूर्त्तताक बनि गेल पूर्ण पर्याय,
चकबिदोड़ लागय नहि ककरा, ताकय सब चकुआय।

बीहरि एक ताहिमे पैसल दूनू बेराबेरी,
डँसत एक दोसरकेँ, मरबामे लगतै की देरी?
धर्म धुरन्धर सब मिलि टेकल गोवर्द्धन गिरि-भार,
सत्रह छिद्रवला नौका चढ़ि करता यमुना पार।

यदुवंशीकुल भूषण अपने जतय विराजथि कंस,
ततय काक पूजित, उत्पीड़ित रहय अहर्निश हंस।
जकरा जानल छैक न देशक गौरवमय इतिहास,
से मर्मज्ञ बनल अपने पुरखाक करय उपहास।

जकर आँखि पर चश्मे दोसर देशक छै चढ़ि गेल,
चौपड़ि आइ बिछाय करै अछि से सब शकुनी-खेल।
योजन-योजन भरिक योजना अँटकल रहल-अधरमे,
लक्ष्मी बन्धक पड़ली शासक-प्रशासकक घर-घरमे।

मुट्ठी भरि वंचकहिक हाथक पाँचो आङुर घीमे
सबकेँ डारि अपन छै भेटल, के अछि घाटि कथीमे?

मुदा मूल पर जकर नजरि छै से सब भेल अछूत
भ्रष्टाचार-पंक पैसल गधकिच्चनि करथि सपूत।
दूध-दही-छाल्हीक भँड़ारक बनल बिलाड़ प्रभारी
पोखरि सभक करै अछि चौकस बगुला पहरेदारी।
उचित बात जे बजाय सम्प्रति सैह खसै अछि खत्ता
ताशक खेल एहन चलइछ जे पंजा पर अछि सत्ता।
नहला पर दहलाक खेल तँ अतिशय भेल पुरान,
'ट्वैन्टीएट'क एहि खेल मे होय गुलाम प्रधान।
तकरापर रक्षाक भार हो जे चलबाबय गोली,
भीतरसँ खखड़ी बाहरसँ टाँस केहन छै बोली।
आहारे संचय करबालै जाल लगाबय मकड़ा,
पुनि ओझराय मरय ताहीमे छैक प्रसिद्धे फकड़ा।
शत-सहस्त्र की लक्ष-कोटिमे आब न चलय हिसाब,
प्रजातन्त्रमे अरब-खरब पर अनुखन पड़य दबाव।
खिखिर छोट अछि तैं की, देखू नाडड़ि छै कत मोट,
के जनैछ जे कखन करत के कतय महाविस्फोट।

29-6-96

लोकतन्त्रक पहलमान

पाटीने भिन्न-भिन्न, नेता सब सटले,
बाहर सँ सटल-सटल, भीतरसँ बँटले।
एक मात्र मुद्दा छनि, तै पर छथि डटले,
लोकहितक बात कण्ठ सबकेँ छनि रटले।।

बैंकमे ने 'फिक्स्ड' छनि, घरमे तँ घटले,
सम्पत्तिक लेशो नहि, देह दशा लटले।
सीबि कते सकता? आकाश जखन फटले,
भुक्खड़ समाजकेँ तँ पात भेटत चटले।।

अपना लै नहि ने, समाज लेल मरता,
कुर्सी पकड़ाय दियनु, सभक कष्ट हरता।
देश थिकनि अपने, उच्छिन्न भेल चरता,
हम सबकी कहबनि, ओ अपने सब करता।।

हम सब बनबैत छियनि तखन ने बनैत छथि,
देशक सब संकट तँ येह ने जनैत छथि।
छथि जते सकैत तते दूर धरि फनैत छथि,
जा जा विदेश एते कर्जो अनैत छथि।।

हमरे अहाँक लेल एते ने हरान छथि,
किछुओ छथि तैयों गरीबेक सन्तान छथि।
रहितो इमानदार कनिएँ बैमान छथि
तैं सँ की, लोकतन्त्र लेल पहलमान छथि।।

हम सब छी बुड़िबक आ ई तँ बुधियार छथि,
छोड़ऽ लै कुर्सी तैं नहि ने तैयार छथि।
जातिवाद तोड़बालै बड़का औजार छथि,
केहन केहन चोर केर कान कटनिहार छथि।।

डूबि पानि पीने एकादशीक बापो
बुझिए ने पाबथि तेँ लगतनि नहि पापो।
रावणे असंख्य तखन व्यर्थ रामचापो
करतनि की टेढ़ साधु-सन्त सभक शापो?
अपने घर भरलनि तेँ ओ की क्यौ आन थिका,
हम सब तेँ ठठरी छी, यैह एकर प्रान थिका।
दुइए टा हाथ पैर तैयो भगवान थिका,
ज्ञान थिका, ध्यान थिका, जातिक सम्मान थिका।।

पानि परक तेल जकाँ छह-छह करैत छथि,
बोरसीक आगि जकाँ खह खह करैत छथि।
गहुमनकेर पोआ तेँ लहलह करैत छथि,
किन्तु मनक ज्वालामे धह-धह जरैत छथि।।
छिक्का जँ होइ छनि तेँ पहुँचै छथि लन्दन,
हिनक चरण-धूलि बनय जनता लै चन्दन।
अबै जाउ भाइ-बन्धु, करियनु अभिनन्दन,
यैह ने सुनैत छथिन सभक करुण-क्रन्दन।।

जनते सोपलकनि ने हिनक हाथ सत्ता
बान्ह भने धसल, सड़क भेल गेल खत्ता।
एक पैर दिल्ली तेँ दोसर कलकत्ता,
करता गरीबीकेँ यैह ने निपत्ता।।
कीर्त्तिकेर झण्डा फहराय रहल ठाम-ठाम,
हिनके गुणगानेँ गुंजायमान गाम-गाम।
सुखमे मुखराम कहाँ, दुखमे ने राम-राम,
आब ने बुझइतनि जे सत्ते थिक राम नाम।।
देश आ समाज लेल मूड़िओ कटौता,
आओत जखन बाढ़ि तेँ विमान चढ़ल औता।
उपरेसँ भोजनलै 'पैकेट' खसौता,
स्वर्गेमे लऽ जा कऽ सबकेँ बसौता।।

पशुधन तँ सब दिनसँ कहबय बेचारा,
ओकरा की बूझल चिबौलक के चारा।
बंचकते सब दिनसँ एकटा सहारा,
हिनका लै एक रंग कुर्सी ओ कारा।।

लसकल अछि लोकतन्त्र तकरा बँचौता,
भेल जे घोटाला से यैह ने जँचौता।
आँकड़ वा पाथर हो, सबकेँ पचौता,
'इल्लिम' छनि आङ्कुर पर प्रान्तकेँ नचौता।।

क्रान्तिकेर ज्वाला ई अपने धधकौ लनि,
सूतल स्वाभिमान तकरा यैह ने जगौलनि।
दलित दीन दुखियाकेँ अंक सँ लगौलनि,
धर्म केँ खेहारि कऽ सिमानसँ भगौलनि।।

चाल देलक पोठी, पकड़ाय रहल भुन्ना,
अंक भने एक मुदा तैपर दस सुन्ना।
एक मनक कोठी पर चारि मनक मुन्ना,
अहंकार कंसोसँ हिनकर चौगुन्ना।।

हमरा बुझाइत अछि ई सब अवतार थिका,
लोकतन्त्र-वीणामे यैह लोकनि तार थिका।
धर्मक निस्तार थिका, पापक विस्तार थिका,
जनतन्त्रक छाती पर सद्यः संहार थिका।।

20-10-96

पञ्चपदी

मर्कटकेर हाथ घड़ल मोतीकेर माल,
नढ़या सबओढ़ि लेलक सिंह केर खाल,
भिन्न-भिन्न राग सभक, भिन्न-भिन्न ताल,
लोकतन्त्रकेर भेल हाल तैं बेहाल,
बान्हि राखि देल गेल जखन संविधान
तखन बचत देश कोना, कहत के ठेकान।।1।।
भेटिजाय भोट ताहि हेतु महाजाल
रहल सब फेकैत अपन बजा-बजा गाल,
रोगग्रस्त होइत गेल देश ई बिशाल,
कृषक श्रमिक केर भेल जीवनो जपाल,
प्रतिनिधि जँ बेचि लेथि धर्म ओ इमान
तखन बचत देश कोना, कहत के ठेकान।।2।।
बाँटि देल गेल जाति-पाँतिमे समाज,
घोँटि-घाँटि पीबि गेल लोक लोक-लाज,
रक्षके करैछ हाय! भक्षकोक काज,
डूबि जाय ने कदाच चप्प दऽ जहाज,
केवल कुर्सीक हेतु मचय घमासान,
तखन बचत देश कोना, कहत के ठेकान।।3।।
हमही छी त्राता, सब ढकिते रहि गेल,
हमही उद्धार करब, बकिते रहि गेल,
लोक आँखि गाड़ि बाट तकिते रहि गेल,
किन्तु बेर-बेर आबि ठकिते रहि गेल,
जैह रहय अप्पन सैह भेल आन
तखन बचत देश कोना, कहत के ठेकान।।4।।
गाम थीक एहि देशकेर मेरुदण्ड,
देखि से पड़ैछ आइ भेल नण्ड-भण्ड,
मुसरी धरि घर-घरमे घीचि रहल दण्ड,
नेतृवर्गकेर गेल बढ़िते पाखण्ड,
कुहरि कुहरि काल काटि रहल जँ किसान,
तखन बचत देश तकर कहत के ठेकान।।5।।

8-11-97

लच्छन एक कुलच्छन चारि

लच्छन एक कुलच्छन चारि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
नीचाँ सँ ऊपर धरि सगरो
गत्र गत्रमे लागल घून,
दुश्शासनमे दुर्योधन लग
फेल भेल सबटा कानून।
दुर्मतिया मति रहल बिगाड़ि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
माघ-फागुनक ठार जेहन छल
तेहने तपल जेठ-बैशाख,
वर्षा अबिते उबडुब-उबडुब
डूबि रहल अछि लाखक लाख,
सड़क बान्हमे पड़ल दड़ारि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
देशक नावक कर्णधार सब
कैँ छनि केवल बसिला धार
लोकतन्त्र लोकल अछि उपरे
जनता ठोकओ अपन कपार,
पाप धर्मकैँ रहल पछाड़ि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
चण्ड-मुण्डकेर कथा सुनल अछि?
से फेरो जन्मल अछि आइ,
देव-शक्ति संगठित न जा
ता' नहि अवतरती दुर्गा माइ,
एकरा कोना सकब संहारि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
कहियो कहबी छल जे–
उनटे-जोर-जोरसँ बाजय चोर,
आ प्रत्यक्षे देखि रहल छी
चोरा सब मिलि करय सङोर,
उनटे तै पर रहल दहाड़ि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
चारू चक्का पंचर हो तँ
काबिल ड्राइवर की करताह,

पेट्रोलक टंकी फूटल हो
तैं पेट्रोल कतऽ भरताह,
तदपि सीट लै बजरय मारि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
जे वियाह करबे नहि कयलक
से की जानय त्रिया-चरित्र
जे कूची नहि धयलक तकरासँ
बनतै सब चित्र विचित्र,
दैवक लिखल सकतके टारि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
जहिया पौलहुँ ई स्वतन्त्रता
तहिया भेटल खण्डित देश,
किन्तु चरित्रक संगहि सम्प्रति
खण्डित अछि पूरा परिवेश,
काटओ लोक भने बपहारि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
स्वर्ण जयन्ती वर्षो बीतल
एकरो पूरल वयस पचास,
स्वार्थक आगि धधकले जाइछ
तै पर बहय पवन उनचास,
ककरो क्यौ नइ करय पुछारि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
चन्द्र छथिन शेखर पर जनिका
ताहि देवकेँ बड़ संताप
ता-ता थैया पैसि केन्द्रमे
आब करय सत्यक अपलाप,
भितरे-भीतर बहय बिहाड़ि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।
सीतारामझाक ई पाँती–
'दय गरदनियाँ धैने टीक'
अक्षर-अक्षर सत्य बुझाइछ
'हटय न जे से थेत्थर थीक'
मारि-गारि लेलक अवधारि, एकसर की करती भुल्ली बिलाड़ि।

13-8-98

नेता वचनामृत

लड़े-लड़े कहि मतदाताकेँ आङुर पकड़ा बुलवऽदे,
जकरा जे होइछौ से होइछौ, हमरा कुर्थी उलबऽ दे।

1

जनतन्त्रक महिमा बड़भारी दुनियाँ भरिमे घोल छै,
भने भरल हो भुस्सा गोबर तैयो मुण्डक मोल छै।
राजनीति थिक सौंस सुपारी, तैं तँ सक्कत होइते छै,
तैयो ला हमरा कल्लातर गमे गमे गुलगुलबऽ दे।।

2

राज चलायब ठट्ठा नहि छै, तिकड़म भिड़बऽ पड़िते छै,
जते विरोधी होइ छै से जी-जान लागकऽ लड़िते छै।
मुदा असल गुरकिल्ली सबकेँ नीक जकाँ नहि बूझल छै,
तैं स्वतन्त्रता देवीकेँ ता हमरे मचकी झुलबऽ दे।।

3

गाम छलौ बड़ सुन्दर, गौआँ प्रेम भावसँ रहै छलैं
सुख-दुख जखन जेना जे अयलौ सब मिलि-जुलि कऽ सहै छलैं।
के जानय जे आगि लगा, के लंका बना नुकायल छौ,
पानिक कर ओरियान, मुदा ता हमरा रोटी फुलबऽ दे।।

4

बुझलहुँ जे बड़ मेहनति कयलैं, खर्चो पूरा लागल छौ,
खेती तँ छउहे बड़ शनगर, संग कपारो जागल छौ।
ई सामाजिक न्याय थिकै जे सबकेँ भाग बराबरि हो,
समगर्दा सम्पत्ति सभक, तैं हमरा पाड़ा हुलबऽ दे।।

5

स्वतन्त्रतामे जनकल्याणे तँ सरकारक काज थिकै,
नेता होइ छै एक, असलमे सकल समाजक राज थिकै।
क्यौ अधीर जुनि हो, धैरज धर, एखन एकर फल काँचे छै,
एमहर ला हमरा मुट्ठीमे, ताबत एकरा घुलबऽ दे।।
जकराजे होइ छौ से होइ छौ, हमरा कुर्थी उलबऽ दे।।

30-9-98

भारत देश महान

भारत देश महान,
तैं नेतासँ अधिकारी धरि अधिक व्यक्ति बैमान।
अति उदार ई देश,
लोक सभा धरि लुच्चो-लम्पट लै निर्बाध प्रवेश।
अद्‌भुत अछि ई भूमि,
लूटि-लूटि घर भरय, ताहि मदमे पुनि नाचय झूमि।
एतय न लाजक छूति,
पत्नीकेँ पहिराय ताज जहले सँ चलबय जूति।
देखू आँखि निड़ारि,
कयने अछि सकदम्म बाघ केँ घुरखुड़ बैसि बिलाड़ि।
चढ़ल जाय नित कर्ज,
जाओ निखत्तर ई समाज, छै तकर न ककरो गर्ज।
धन्य धन्य जनतन्त्र,
सतत गरीबक हक खयबा लै रचल जाय षडयन्त्र।
ई थिक पुण्यक धाम,
लोकतन्त्र मजगूत रहय तैं ली नहि धर्मक नाम।
रहू धर्म निरपेक्ष
ताबत धरि जा धरि छाती पर चढ़ि नहि बैसय म्लेच्छ।
ताधरि सहि ली क्लेश
जाधरि देशक कोनहु कोनमे बाँचल धर्मक लेश।
ततबे दिन धरि कष्ट
जतबा दिन धरि एक-एक जन भय न सकल अछि भ्रष्ट।
किछुए दिन सन्ताप,
पैसि रहल अछि रोम रोममे क्रमशः पापक बाप।
सुनू फोलि सब कान,
जन-प्रतिनिधि कैँ छोड़ि, शेष हम सब छी परम अकान।
शासन अछि सन्नद्ध,
दुख-दारिद्र्ये दूर करक हित प्रतिनिधि छथि प्रतिबद्ध

आबि न सकत विपत्ति,
जखन विदेशक बैंकहिमे छनि संचित सब सम्पत्ति।
जँ किछु होइछ देरी,
हिनक दोष नहि, एकरा मानू अपने कर्मक फेरी।
राखू सब सन्तोष,
जँ किछु होय असुविधा, तकरा बुझू कपारक दोष।
करी न मनमे खेद
भीतर-भीतर सब पार्टीमे छै अपने मतभेद।
ताधरि जुनि अगुताइ,
छैक खजानामे जाबत धरि बाँचल एक्को पाइ।
आओत स्वर्णिम प्रात,
पड़ले रहब चितंग, पेट पर रहत विधर्मिक लात।
व्यर्थ न क्यौ घबड़ाइ,
खाउ राबड़ी भरि भरि इच्छा, चाटू बैसि मलाइ।
देशक उन्नत भाल,
असल मोड़ पर सबठाँ छथिहे बैसल गुरु-घण्टाल।
एतबा राखू ध्यान,
राजनीति माने थिक फूसिक सबसँ पैघ दोकान।
चमकत तखन ललाट,
लोकसभामे जयता चुनि चुनि जखने मूर्ख चपाट।
फुजल उन्नतिक बाट,
शासन-सूत्र सम्हारि लेता जहिए तस्कर सम्राट।

16-12-98

हदमदीसँ

हदम द्दीसँ वमने नीक
बाँचल चिन्ता तखन कथीक?
देशक हित जी-जान लगौने चारिमपनमे अयलहुँ आब,
गोटी एक उफाँटि पड़ल तँ ताही पर छल सभक दबाव।
ओझरौने रखने छल टीक
आयल समय एहि कहबीक।।
केवल सबकेँ सूझि रहल छै अपने दल आ अपने प्रान्त,
सौंसे भारत जाओ निखत्तर, जाओ चूल्हिमे सब सिद्धान्त।
सब बुझैछ हमही छी ठीक,
लपकब टूटत जखने सीक।।
गोरि नारि गौरवसँ आन्हरि, तकरे ई प्रत्यक्ष प्रमाण,
त्रिया चरित दैवो ने जानथि तँ पुनि जानि सकत के आन?
ई दुस्साहस थीक अहींक
फेकि देल बुझि पानक पीक।।
बीतल दिन इतिहास बनै अछि, जानय से सौंसे संसार,
अटल बनि डटल रहब तँ दुर्गा आबि लगौती पार।
बनल रहू पुरुषार्थ प्रतीक,
करू भार हल्लुक धरतीक।।
कोन भरोस एहन जन्तुक जे सहि न सकय दिनकर प्रकाश,
तकरा पथसँ विपथ करत के अपनापर जकरा विश्वास।
लिअऽ नाम वजरंगबलीक
धरत बाट सब अन्ध-गलीक।।

10-4-99

गमौताह इस्लामाबाद

पाकिस्तानक घरहुक आँटा करगिल मे जा भेलै गील,
देखियौ ने पहिरय पैजामा तैयो भेलै ढेका ढील।
काका-काका कहि किकिआयल, काका कान ऐंठिए देल,
जकरा बलेँ कुदैत रहय, से क्यौ लङ्टइमे संग न भेल।
अपने मुँह मिट्ठू बनि मीयाँ नङ्टे ठाढ़ भेल अछि आइ,
देखि लेल बापक बियाह आ ताहि संग पितियाक सगाइ।
जे न बाज आयल दुश्मनकेँ पानि पिअयबासँ रणधीर,
तकरा सोझाँ कोना नवाजशरीफक टट्टू रहितनि थीर।
एतय प्राण अर्पण करबाऽलै बलिदानीक समूह अपार,
ओतय हाल बेहाल देखि कय पीटि रहल सब सभक कपार।
मुसकाँड़ीमे फँसल मूस सन किछु घुसपैठी हुलकी दैछ,
बन बिलाड़ बनि बैसल सैनिक लगले तकरापर झपटैछ।
छटपटाय सब जेना पानिसँ बहरयलापर छरपय माछ,
हेहर किन्तु बुझय-छाहरिए तरमे छी जँ जनमइ गाछ।
घृणे जकर छै प्राणवायु से सज्जनताक बुझय की मोल
कबकब छोड़ि कतहु दुनियाँमे सुनलहुँ मधुर होइत छै ओल?
थीक असलमे नढया ऊपर ओढ़ि लेलक अछि बाघक खोल,
जँ समधानि बजरतै सोटा 'हुआ-हुआ' बहरयतै बोल।
बाबा बलेँ लड़ल फौदारी से कतेक दिन चलतै आब,
छल-छद्मक सीमा जे टपलक देबऽपड़तै तकर जवाब।
नियति कनुनियाँ धिपा रहल छै एकरे भुजवा लै कंसार
ई विश्वास पात्र नहि ककरो, चीन्हि गेलै सौंसे संसार।
सुमिरन करा रहल छनि भारत पुनि छठिहारक दूधक स्वाद,
ढाका गमा चुकल छथि, फेरो गमौताह इस्लामाबाद।

22-7-99

अछि वसन्त तैं की

अहंकारमे मातल शक्तिक पीटि लेअओ क्यौ डंका,
एक विभीषण की कय सकितथि, उजड़ि गेलनि ने लंका?
बगुला तथा बिलाड़ि कोना कहु पहिरत तुलसी माला,
रहत हुड़ारक संरक्षण मे रक्षित की गोशाला?
कब्र खूनि कय मानवता कैं गाड़ल गेल जतय अछि,
संविधानकैं चिर्री-चिर्री फाड़ल गेल जतय अछि,
से की जानय मित्रताक सुख, की मानय समझौता,
ई वकाण्ड प्रत्याशा थिक, क्यो सुफल कतयसँ पौता?
निर्दोषक संहार करय आ नाम जेहादक लै अछि,
अनका चिन्तित कयनहि अछि आ अपनो हाथ मलै अछि।
विश्व भरिक प्रत्येक देशमे ई आतंक पसारय,
अपनो घरमे आगि लगा कय आनक घरकैं जारय।
अहाँ रटैत रहू समतूले थिक काबा ओ काशी,
ओ दर्शविते रहल सदासँ करनी सत्यानाशी।
अहाँ उदार बनू, ओ किन्नहु रोच न ककरो मानत,
गेनजकाँ जतबा लतिअयबै तते ऊँच धरि फानत।
शुद्ध दूध सँ भने पटबिऔ, सुनत न एक्को रत्ती,
कुचकुच्ची कनियों की कमतै, थीक कबाछुक लत्ती।
पत्ती-पत्तीमे विष घोरल, रोम-रोम शैतानी,
तावतधरि दम धरत न जा धरि मरि नहि जयतै नानी।

कुकुरक नाङड़ि सोझ करत से लोक कतयसँ आनब,
गन्धपसारनि गमकै छै से ककरो कहने मानब?
जे कयने छै सीकी, सेहो बाजय सिटिया-सिटिया,
जन्म-कालसँ नाचि रहल छै चानि उपर टिकटिकिया।
मूर्खतोक किछु सीमा छै, ई तकरो फानि चुकल अछि,
शत्रुताक ई चालि न छोड़त मनमे ठानि चुकल अछि।
एक बेर निर्णायक युद्धक करय पड़त तैयारी,
एकरा लै न पड़ोसी किछु आ ने मानय भैयारी।
धर्मेकैं धकिया कय चाहय जैं पापक संरक्षण,
तैं लक्षित हो महाभारतक एक-एक टा लक्षण।
अछि नृशंसता अपनहु लज्जित देखि एकर किरदानी
महाविनाश अवश्यम्भावी, मानी वा नहि मानी।
पापक भार बढ़ल ततबा जे रहिरहि धरती कापय,
ताहूपर पाखण्डी उनटे, बेसुर राग अलापय।
अछि वसन्त तैं की, कोकिल केर कण्ठ तदपि अवरुद्धे,
मज्जरसँ मातल माकन्दक मौसम परम विरुद्धे।

25-2-2001

दुबरयबाक कारण

1

ककर पकड़ि नाङड़ि वैतरणी पार करब हम,
कहुना फेरो लोक सभामे पैर धरब हम।
सत्ता भोगल जीह सदा चटपटा रहल अछि,
आ हलाल मुर्गीसन मन छटपटा रहल अछि।।

2

ताल ठोकिकय अछि समक्ष दुर्दान्त विपक्षी,
देखि-देखि से छूटि रहल अछि ई कछमच्छी,
एकबेर नहि, सबकैं बारंबार ठकलिऐ,
जितला पर जे गेलिऐ से नहि घूरि तकलिऐ।।

3

ताही डरें पानि पेटक गड़गड़ा रहल अछि,
एहि बेर सब चक्र-चालि गड़बड़ा रहल अछि,
उमतल रहलहुँ, आब करै छी आत्म-निरीक्षण,
तखन बुझाइछ बीन्हि रहल अछि एक-एक क्षण।।

4

घेड़ि लेलक दुरमतिया तैं पहिने नहि चेतल,
मानू अपनहि हाथैं अपने गरदनि रेतल,
अपने करनी सुमिरि-सुमिरि पछताय रहलछी,
सपनोमे देखै छी-पटका खाय रहल छी।।

5

जितलहुँ तैं बुझि पड़ल आब बड़का नबाब छी,
किछु फुरैछ नहि ककरा ककरा की जबाब दी।
दुइओ पुश्तक लेल भेल ओरियान न पूरा,
ई मध्यावधि भोंकि देलक छातीमे छूरा।।

6

की कपार मे लिखने छथि नहि जानि विधाता,
बेड़ा पार करत, वा चित्त करत मतदाता।
महासमर केर रंग-ढंगसैं घबड़ायल छी,
एही चिन्तामे डूबल हम दुबरायल छी।

30-8-99

कान पाथि अपनहु अकानिऔ

फेर विधान सभाक चुनावी गरमागरमी आबि रहल अछि
इस्कुलिया चटियासब पुनि प्रोत्साहन भत्ता पाबि रहल अछि।
खत्ता-खुत्ती भेल सड़क पर सब तरि चेफड़ी सटा रहल अछि,
पक्का होइछै काज ताहि पर तैं अलकतरो चढा रहल अछि।।

सामाजिक न्यायेक नामपर फेर ठकायत सुधुआ जनता,
जे अलकतरा पचा सकथि पुनि सैह लोक सब मन्त्री बनता।
चारा सैह चिबौलनि जनिकर काजक भेल न गौंतो गोबर,
वर्षे वर्षे मुदा बनौलनि से सब टाका ठामहि दोबड़।।

मुँहमे मधु, जेबीमे जहरक पुड़िया लेने घूमल करता,
बनल विनीत, सकल मतदाता-चरण-धूलि पुनि चूमल करता।
भोगल सुख सब सुमिरि सुमिरि अगिला सुख लै सब नाक रगड़ता
भरि चुनाव दुर्मद नेतो सब-जौंक-जकाँ भरि बीत नमरता।।

अपना घरमे जगह न बचलनि, सासुरमे किछु घर छनि खाली,
अपने जँ भीतर चल जयता तँ बाहर रहथिन घरवाली।
बीतल दशक बिहारक अनुपम होइत रहल घपलेपर घपला,
ई अन्दाज लगा न सकै छी ककरासँ आगाँ के टपला।।

हाकिम? हा किम्! एतय किमपि नहि, जे होयत से उपरे जा कऽ,
तावत जनिका जते सुतरतनि खा जयता सब उला-पका कऽ।
फेर उलौता, फेर पकौता, रहत लोक यदि नहि सतर्कतँ,
कुम्भीपाक बिहार मध्यमे बचल रहत किछुओ न फर्कतँ।।

रामक संग रावणक नामो आबि जाइ छै सभक ध्यानमे,
कृष्णक संगहि कंसक चर्चा कयल गेल अछि सब पुराणमे।
भनें सुकर्मे आ कि कुकर्मे नाम लोक लेबे करैत छै,
एकक जयजयकार, गारि पुनि दोसरकेँ देबे करैत छै।।

पुनि गरीबकेँ ठकबा लै मन मोहक नारा गढ़ल जा रहल,
कने मने आशा जे जनमत लोकतन्त्र दिस बढ़ल जा रहल।
सुच्चा लोकक सूक्ष्म दृष्टि पर लुच्चा-लम्पट चढ़ल जा रहल,
कानपाथि अपनहु अकानिऔ कतहु मर्सिया पढ़ल जा रहल।।

4-11-99

दुइचित्र (कथाकाव्य)

बापक मरिते, बुच्चू बाबूक कटै छनि दिन
भिनसरसँ लै दसबजे राति धरि
टोल समाजक घर परिवारक अपन और सौंसे संसारक
अंट-संट अधलाहक नीकक चिन्तेटा करिते करिते।
बापक मरिते
सौंसे वेदान्तक सार वस्तु श्राद्धक प्रातेसँ बुझय लगलथिन।
जाधरि बाप कमौआ छलथिन
लिखबै छलथिन पढ़बै छलथिन
पहर-पहर भरि जीवनमे ओझरायल गीरह
सोझरयबाकेर बुद्धि बैसि सिखबै छलथिन,
सब साधन प्रस्तुत रहै छलनि सदिकाल।
जखन जहिना खयता जहिना पीता,
जाहीसँ हिनकर नीक होइनि,
तीमन-साजन हिनके रुचिएँ खखना बजारसँ लबै छलनि।
धोबियाकेँ नित्त बिना अयने ई धोती नहि फेरैत छला,
भरि टोलक नवतुरिया छौंडाकेँ
छलै उठौना नित्य सिनेमा।
ताही बुच्चू बाबूक मलिन तन, मलिन बसन,
आ मलिन मनक ई हाल देखि
जे मुग्ध रहै छल-आइ क्षुब्ध अछि।
आबि पिबै छल नित्त चाह जे,
आबि कहै छल-वाह! वाह! जे
से सब नाक सिकोड़ि रहल अछि।
ई सब सोचि
बताह जकाँ बौअयला ढहनयला बहुतोदिन,
किन्तु एक अवलम्ब घरक, घरभरि लोकक,
तेँ चित्त शान्त कऽ बुच्चू बाबू बापक बरखी
करबालै अयलाहय भोरुका गाड़ीसँ।

तहिए सँ माय बताहि छथिन
जहिया ई तजलनि गाम अपन।
भरि बरख बितौलनि ओ बूढ़ी
सोमवारी, मंगलवारी मे।
तैंकी ओ गहना बेचि लितथि?
पुतहुक मुँह बिनु गहनें देखितथि?
रहि रहि मनमे छनि आबि रहल–
''जनिका बलसँ रानी बनिकऽ
जीवन सौंसे यापन कयलहुँ,
छल बात हृदयमे जे तहिया
की पूरि सकत से?
हे भगवत्ती! तखन करब सन्तोख कोना?
बिनु गहनें पुतहुक मूँह देखि नहि सकब
तहि लै जीवी आ की मरी।
बुच्चू बाबू विधुऐल बेचारे जीवन भारें दबल
जाँत लदलाहा गदहा जकाँ जीह
हथहथ भरि छला बबैत,
बापक पहिले बरखीतेसरे दिन में छलनि पबैत।
कोठी ढनढनहे सब घरमे,
लत्ता-कपड़ा सहजहि आजुक युगमे लगलै आगि,
ई सब रहि-रहि मन पड़ैत छनि लुत्ती दै छनि दागि,
फुटलो कौड़ी एखन हाथ पर
लिखबे ने कयलनि भगवान।
बिच्चे आङन बुच्चू बाबू दूनू हाथें पकड़ि कपार
सोचय लगला–
हमरा लेखें शून्य आइ सौंसे संसार।
जीवन-पट पर पछिला चित्र, देखि भेल छनि
मोन विचित्र, कहबै ककरा, धरत हाथ के?
बुच्चुक दूनू नयन-कमलसँ बहि चललनि अछि धार
हृदयमे धैर्य आइ धरिते-धरिते।
ई हाल देखि बूढ़ीक कौंढ़ छनि कापि रहल।

बुचबा चमार रस्ता धयनें
एखनहु अछि राग अलापि रहल जे
''कमला मैया सपना देलकै''।
ओ होइते सब दिन प्रात, खाय भरिपेट
बासिए भात, धरैए टीसन दिसकेर बाट,
मरम्मति अछि करैत जुत्ताक
कमा कऽ नित्त लबै'ए टका पाँच वा सात,
फिकिर ओकरा कथीक रहतैक?
साँझखन ताड़ी कसिकऽ पीबि
राति भरि भेल रहय उन्मत्त
ने गारिक लाज न मारिक डऽर
गामसँ कनिञे दूर फराक
बान्हि लेने अछि बुचबा छोट छीन
बाँसे केर एक टा घर, रहैए ताहीमे सन्तुष्ट,
रहथु क्यो रुष्ट रहथु वा तुष्ट,
धारने छनि ने ककरो रीन न ककरो एक्को पाइ उधार,
मस्त छै बुचबाकेर संसार।

ने बापक बरखी छै करबाक
ने बेटाकेर छैक उपनयन
रहैए सब झंझटसँ चैन।
कहै छनि भगवतीक लग जाय
मन्दिरक द्वारे लग भऽ ठाढ़–
'सदा पनही बाबू-भैयाक
हमर भागेँ धरि रहौ टुटैत,
जाहिसँ भरि परिवारक लेल
रहय ढौआ धरि खूब जुटैत।

8-4-47

चाही आइ एहन रघुनन्दन (कथाकाव्य)

प्रतियोगिता परीक्षा देलनिं चुन्नू जखन अनेको खेप।
घडुछामे पकलहा आमपर सुतरि गेलनि ई तेसर ढेप।।
मेडिकलक बनलाह छात्र आ नाम लिखौलनि टाटा जाय।
भूखन भैया तहिएसँ सोचय लगला घाटाक उपाय।।
सुच्चा सरिसौ तेल लगा कऽ नित्तह देथि मोंछ पर ताव।
बौआ केर मोल तँ बढ़बे करतनि, हमरो बढ़त प्रभाव।।
पाँच बरख धरि पड़त पुराबय करथि सभक लग एकरे चर्च।
चारि हजार सलाना निजगुत तकर अलावे पाकिट खर्च।।
एकसरमे भूखन भैया बैसल-बैसल मन मोदक खाथि।
मनसूबासँ आसिन मासक पाड़ा जकाँ मोटायल जाथि।।
बहरघराकैँ तोड़ि, एहिठाँ बान्हब पक्का एक दलान।
एकरा एना बनायब, ओकरा ओना करब से बनबथि प्लान।।
हस्ताक्षरक जगह पर अपने भने लगाबथु औँठा छाप।
मुदा पाँच बरखेक बाद सँ कहबौता डाक्टर केर बाप।।
जागलमे सोचथि से सोचथु, सुतलोमे एतबे सपनाथि।
गर्मी रहनि तते फुकने जे पूसो माघो मास भफाथि।।
देखबामे चुन्नू चन्ना सन आ दस बीघा आस्था-पात
आब हजार-बजारक गप की? पाँच लाखसँ कम की बात?
कनकछड़ी सन कनियाँ आनब आ विदाइमे मोटरकार।
घरमे बैसल टेलीवीजन पर देखब सौंसे संसार।।
मनोरथक तँ पूल नमरि गान्धीक सेतु धरिकैँ टपिगेल।
स्वर्गक सीढ़ी लागल लगमे लागय लगलनि अपना लेल।।
धैर्य धारि, कछमछ करैत कहुना कऽ कटलनि पाँचो साल।
कन्यागतक घटक सब देथिन परिचय, जाथि लगौने टाल।।

x x x

दूनम्बर धन्धी समाजमेसँ क्यौ आबि गेलनि यजमान।
जे निधोख भय एहन काजलै बहबय टाका पानि समान।।
तुरत पठौलनि तार गामसँ..... ''जहिना छी तहिना चल आउ।
मैयाँ अब-तब कय रहली तैं आबि अपना मुँह कने देखाउ।।''

चुन्नू टाटामे पढ़ैत छल, प्रगतिशील ततबा भय गेल।
कय देलकनि भूखन भैयाक बनाओल सबटा प्लाने फेल।।
युवक सभामे टका गनयबाकें कहने छल बड़का रोग।
ताही रोगैं ग्रस्त करक हित पिता लगौने छलथिन योग।।
मैयाँ आङनमे अरिपन दय करइत छलथिन सब ओरियान।
अब-तब की करइत छथि जइते भेटि गेलनि प्रत्यक्ष प्रमाण।।
देखितहि भूखन भैया हुलसल बरियाती लै देल हकार।
जुटल लोक, चुन्नूकैं लगलनि जेना हँसेरी हो तैयार।।
कन्यागतक घरक कोड़ो धरि खीचि जेना आनत सब लूटि।
साँझ होइत धरि गाम-गामसँ गेलथिन सकल कुटुम्बो जूटि।।
सभक बीच जा बजला चुन्नू-सुनथु समस्त समाजक लोक।
टका गनयबा पर कानूनन लागल छै सरकारी रोक।।
हमरे संग पढ़ै छथि निर्धन मित्र, हमर छथि परम अभिन्न।
तनिक पिता के देखल कन्यादानक चिन्तासँ अति खिन्न।।
हुनक देखि दयनीय दशा भय द्रवित वचन हुनका दय देल।
करब विवाह ओतहि हम, सेहो मनमे दृढ़ निश्चय कय लेल।।
''जखन धनुष तोड़ल बिनु पुछनहि मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
तखन हमर निश्चय अनुचित नहि ''कहि चुन्नू लै लेल विराम''
पुनि बाजल-विद्या बल अर्जब, देब पिताक मनोरथ पूरि।
मुदा टका गनबाय समाजक बीच करथु नहि हमरा दूरि।।
सुतक बात सुनि भूखन भैया खसला चारू नाल चितंग।
चुन्नू चलल विवाह करय लै मात्र चारि बरियाती संग।।
चाही आइ एहन रघुनन्दन करथि समाजक जे उद्धार।
पुत्र तथा पुत्रीक बीच पुनि रहि नहि सकय विषम व्यवहार।।

25-6-82

सामाजिक जोगीरा

बेटा वेचि टका तँ भेटल, घरमे अइली चण्डी,
बूढ़ा जारनि फाड़थु, बूढ़ी जाथु चढ़ाबथु हण्डी,
अण्डी नहि ने टाका?

भैंसुर धरथु कोदारि बनाबथु आरि समुच्चा कोला
कनियाँकें भरिगर्मी चाही नित्तह कोकाकोला
गोला बर्फक संगहि।

बूढ़ा-बूढ़ी, भैया-भौजी अपन हँसोथथु माथ,
बौआ एक कमौआ ढौआ देथि बहुरिया हाथ
लाथ गौआँ-घरुआसँ।

कहथि बहुरिया-हम कमाइसँ देब न एक छदाम,
बाबू हमर वियाहे दिनमे चुका देलनि सब दाम
गाम नहि व्यर्थ घिनाबी।

असल बात कहलापर हमरा करथु न क्यौ बदनाम,
फगुआमे पूआ बदलामे फाँकथु भूजि बदाम,
दाम लेलनि, की कयलनि?

बौआ गुम्मी लघने छथि जैं पैसल छनि आदंक,
भय छनि मनमे-कतहु वंशमे लागि न जाय कलंक
सशंकित सदा रहै छथि।

कन्यादानक बेर करय आदर्शक बात समाज़,
बेटा बेर न आबय क्यौ बगुली भरबासँ बाज
लाज धो पीबि लैत अछि।

महारोग पैसल समाजमे अछि ई प्रथा दहेज,
बेराबेरी लागत सबकें तेँ राखू परहेज
करेज न टूटत ककरो।

शाब्दिक जोगीरा

पुछलनि किसनू कहू ककाजी शीशिक मुन्ना ठेकी,
तखन कोना तबलाक नामकें लोक कहै छै ठेका?

उत्तर– जहिना धान कुटल जाइछ जेहिमे से कहबय ढेकी
खोंसै छी धोतीक खूँट जे पाछाँ से थिक ढेका।
गोबर छाउड़ उघै छी जेहिमे से कहबै अछि ढाकी
बंगला देशक मुदा राजधानीक नाम छै ढाका
नाका पुलिसक अड्डा। नाक पोटाक बाट थिक।

राजनीतिक जोगीरा

'आलू ला' उनटाकऽ पढ़बै तखन बुझायत मर्म
राजनीतिमे अपकर्मे सब कहबै छै सत्कर्म
धर्म कलियुगक थिकै ई, अहाँकेँ त्रेता चाही,
एतऽज्ञाताक तबाही,
कते काटब खुरछाही?
कर्म मे लागल ताही।
राजनीति कोविद कोबी दऽ बजला लागय नीक,
चरू उछन्न, मना के करइछ? सबटा थीक अहींक।
टीक ओझराउ समाजक,
छूति अछिए ने लाजक,
अहींटा तँ छी काजक
लूरि सिखने छी बाजक।
पापड़ थिक तरकारिक नेता छेकि लेत भरिपात,
मुदा ममोड़ि दियौ मुट्ठीमे देखू तखन बिसात
दाँतहुक किछु न प्रयोजन,
कथीलै किछु आयोजन?
अठन्नी भरिए ओजन,
प्रेमसँ करिऔ भोजन।
रस्ते बनतै बान्ह, बान्ह धसि चल जयतै पाताल,
मण्डल-मण्डिलमे बाझल छै, देखबै ने रङ्ताल
लाल अछि भेल निपत्ता,
कतेकक कटतै पत्ता,
चहटगर होइ छै सत्ता
अकिल चाही अलबत्ता।
आयल छै फगुआ, बगुला पर चढ़ि सकैत छै रंग,
कौआ तँ कौआ थिक बौआ! भऽ न सकय बदरंग
भंग बरु अंग करत ओ,
जंगलक बाट धरत ओ,
तामसेँ पाकि जरत ओ

आनि पर फाटि मरतओ।
फगुआ छै मन उमकि गेल तँ घीचू दसटा डंड,
कालक डंडा लगला पर टूटत सब मनक घमण्ड।
खण्ड नहि, सौंस सुपारी,
पाउ ताबत सरकारी,
थिकहुँ 'भोट'क व्यापारी
पड़त पाछाँ पिहकारी।
माल साँठि भीतर ढुकबौलहुँ, पूआ चाटि रहल छी,
बाँटि रहल छी जहर ताहि पर उनटे फाटि रहल छी।
काटि रहलहुँ ने चानी?
भाङ दूधेमे छानी,
पड़ंत ससरी पर फानी,
तखन मन पड़ती नानी।
फूलि गेल अछि गाल लाउ ने दै छी औँसि गुलाल
फूटल ढोल जकाँ छी बजइत होयबे करब हलाल
ताल तखने ने लागत,
बुद्धि पर लुत्ती दागत,
करय जे बढ़ि-चढ़ि स्वागत
छोड़ि सेहो सब भागत।
भेल होलिकादहन ताहिमे सकुशल छथि प्रहलाद,
किन्तु हिरण्यकशिपुकेँ एखनहु धयने छनि उन्माद
स्वाद चिखता यमलोकक,
आँखिमे धूरा झोंकक
पीठमे छुरा भोंकक
एखन किछु काज न टोकक।

2

तगड़ा युवा प्रधानेमन्त्री बौआ श्री राजीव।
धरितहि गद्दी करतब अपन देखौलहुँ बेस सजीव।
पहिल फुचुक्का कुंकुम घोरल सुक्खा कने गुलाल
आउ गालपर औँसि दैत छी, मुसकथि मोतीलाल
देखि परनाँतिक शोभा। बेलमे मारू चोभा।

बाल सखा देवेन्द्र नाथ झाक

स्मृतितर्पण

साठि बरख बीतल बयस अनुखन-जनिका संग।
तनिक वियोगें जीवनक रंग भेल बदरंग।।
लागल रहलहुँ आइए छल व्रत देवोत्थान।
ओमहर विधिक विधानमे छल देवेन्द्रोत्थान।।
वचनें कहि न सकैत छी पारस्परिक सिनेह।
हमरा भाइक संग छल एक प्राण दुइ देह।।
एक मात्र आश्रय जनिक छलथिन श्री जगदम्ब।
हमरहु प्रतिभा हेतु ओ छला परम अवलम्ब।।
दूनू मित्रक नाममे उत्तर पद अछि 'नाथ'।
देवलोक कय गमन ओ हमरा कयल अनाथ।।
हम लौकिकतामे रमल कयल मनुज-तन व्यर्थ।
ओ वेदक मर्मज्ञ बनि बुझलनि जगतक अर्थ।।
एहि विदेहक भूमिमे अछि किछु अद्भुत तत्त्व।
जे रखने अछि आइ धरि निः स्पृहताक महत्त्व।।
जहिना कोइला खानिमे हीरा सब न चिन्हैछ।
जकरा नहि छै दृष्टि ओ से नहि पाबि सकैछ।।
छला समाजक बीच ओ तेहने अनुपम रत्न।
बिनु पुण्यें नहि प्राप्त हो कयनहु कठिन प्रयत्न।।
मनक भाव ककरा कहब स्वर अछि विस्वर भेल।
देखि रहल छी मौन भय नियतिक निर्मम खेल।।
हृदय पटल पर खचित अछि रूप, विकल मन-प्राण।
करथु कृपा कय मैथिली शोकोदधिसँ त्राण।।

8-12-88

मित्र प्रवर शंकर मिश्र

विगत तथा आगत प्रभातकेर
मध्यबिन्दु सन्ध्या थिक
निर्विवाद एक मात्र बात यैह सत्य थिक।
गेङ भने जोति दिऐ
से तँ थिक भिन्न बात।
सन्ध्या अन्हारकेर आगमनक सूचक थिक।
तारा सब भरि राति
अपसियाँत होइत रहत,
चन्द्रमा से कूद फान करिते रहताह,
मुदा अन्धकार तानि लेत छतरी
आकाश छापि, रहल डटल तावत धरि
जाधरि प्रभात फेर अलसयलो जागत नहि,
लाल-लाल सूर्यकेर गोला ओ दागत नहि,
अन्धकार भागत नहि।
कविवर कबीर केर तनके चदरियाकेँ
समय अँटकि तागत नहि,
देखत अनागत नहि,
करत कतहु स्वागत नहि,
मनो तखन लागत नहि।

तहिना विचार करू–
जीवन सँ जीवन धरि
कालावधि नपलासँ
मध्य बिन्दु मृत्यु थीक।
जीवनकेर दर्शन तँ

भिन्न-भिन्न व्यक्ति केर अपन-अपन होइते छै
उचितो थिकैक सैह,
किन्तु मृत्यु सत्य थीक,
एकरा के मानत नहि?
सम्प्रति छी भोगि रहल

जीवन जे अपने हम
तकरे भविष्य जखन एक मात्र
मृत्यु सत्य
तखन तकर डरें सुटुकि बैसि रही एक कात
कायरता छोड़ि और कहा की सकैत अछि?

सोचू हे बन्धु।
तीत होइछ अतीत
तथा मृत्यु थिक भविष्य।
अतः दूनू कैँ छोड़ि
वर्त्तमानकैँ सम्हारू
आ तदनुसार डेग दियऽ-जीवन संघर्षमे।

अग्रज, हितचिन्तक आ मित्र प्रवर शंकर मिश्र
सदिखन कहैत छला अपना सम्बन्धमे।
आइ-जखन सुनलहुँ जे
अपने रहलाह नहिं,
आँखि छलछलाय गेल,
संगहि ई बात हुनक
अवचेतन मनमे जे पहिने घुरिआइत छल
एखनहु घुरिआइत अछि।

3-7-2000

बाल साहित्य

बाबू आब लेब नहि जूता

भोरे उठि कय कहलनि यार। मङ्नू अछि सभसँ बुधियार।।
एहि टोलमे अछि नहि नेना। जनु भकड़ार हजारा गेना।।

माय बाप मैआक दुलार। पाबथि मुनटुन सब परकार।।
जहिना पहिरथि जहिना खाथि। जखने पढबा लै चल जथि।।

नहिओ जाथि न तैयो हर्ज। पण्डितजीकेँ अपने गर्ज।।
मुनटुन केर फुजल छनि थोथी। तखन किएक उघथु ओ पोथी।।

हम जूता कीनब तँ आइ। दिअऽ दाम लै हमरा पाइ।।
एकदिन मुनटुन ठनलनि राड़ि। तखन बापकेँ लगलनि चाड़ि।।

कयलनि ढौआ हेतु जोगाड़। बजला-बौआ चलू बजार।।
बाटे टुनटुन भेलथिन भेट। छलनि हाथमे बड़का गेंट।।

बजला मुनटुन-कीऔ दोस। देखि रहल छी हम बड़ जोश।।
कहू हाथमे की ई थीक। ई फोटो से थीक कथीक।।

यदि पचीसटा नवकापाइ। खर्च करी तँ खाउ मिठाइ।।
देखय चाही तँ अलबत्ता। देखू यैह उपरका गत्ता।।

बाबू हम नहि कीनब जूता। कीनि दिअऽ बरु 'धीया-पूता'।।
बजला मुनटुन घुरला गाम। साल भरिक दऽ देलथिन दाम।।

'धीया-पूता' जनवरी 1960

नेरू आ पड़रू

भागमन्त गिरहस्तक खुट्टा पर नेरू आ पड़रू
कोना रहै छल, तकरे खिस्सा लियऽबटुक सब दड़रू।
एक गाय आ एक महिंस छल तथा बड़द दू गोट,
ताहिबीच जन्मल छल नेरू आ पड़रू अति छोट।
गाय महिंस जा बाध चरै छल हरियर कोमल घास,
बड़द दुनू जोतनि गिरहस्तक मिलि तीसो दिन चास।
नेरू पड़रू पड़ल पिबैछल अपना मायक दुग्ध,
कूदय फानय नेरू, पड़रू देखि रहै छल मुग्ध।
एकसर कूदब नीक लगै नहि तैं रखलक प्रस्ताव
हमरे संगे कूदह मीता हम न मानबह आब।
कूदऽमे आनन्द अबैछै फानऽ मे उत्साह,
फरहर देह करह, घर छोड़ह, करह न व्यर्थ तबाह।
पड़रू सुनि प्रस्ताव मनहिमन किदन-कहाँदन गुनलक,
पटपटाय दुहुकान पड़ल रहि, आँखि अपन पुनि मुनलक।
मन रहलै अलसयले, कूदब बुझि पड़लैक पहाड़,
उठय पड़त से सोचि कापि उठलै भरि देहक हाड़।
बाजल-सुन रे मीता तोरा की उठलौ ई उमकी
कूदि-फानि कऽ देखा रहल छैं अपना देहक चुमकी।
लगतौ ठेस कतहु तैं खसबैं चारूनाल चितंग,
घोल अनेरे उठतौ सब दिस मीता अछि अवढंग।
हमर बात सुन, बैसि एकठाँ हम पटपटबी कान
के कतेक पटपटा सकल अछि राखी तकर ठेकान।
जे जीतय तकरा गरदनिमे घण्टी पड़य इनाम,
जे हारय तकरा इनाममे कौड़ी तीन छदाम।

अपन-अपन प्रस्ताव समर्थन भेल न एक्को केर,
पड़रू रहल पड़ल आ नेरू कूदऽ लागल फेर।
नेरूकेँ देखथि फनैत कोम्हरहुसँ आबि गृहस्थ,
दिन-दिन बढले जाइत क्रमशः होइत जाइत स्वस्थ।
घण्टी आनि लाल डोरीमे गँथलनि भेल प्रसन्न
बन्हलनि नेरू केर गराँ मे बाजल-टन-टन-टन्न।
बैसल पड़रू पर गेलनि पुनि जखन गृहस्थक ध्यान,
छै कौड़ीक एक छर घरमे जो रौ झिङ्गुरा! आन
पड़रूओकेँ बान्हि दही जे ईहो लागय नीक,
सुनितहि नेरू जानि बूझि कऽ देलक पटदऽ छीक।
बाजल नेरू-कहरे मीता! भेटलौ कोन इनाम
दुनियाँमे एहने होइत छै आलस्यक परिणाम।
जँ चाही देशक उन्नति तँ कऽ आलस्यक त्याग
करी काज जीवनमे, तखने बाँचत माथक पाग।

('बटुक' सचित्र कथा विशेषांक, 1765)

दिगदिग थैया लड़ेलड़े

दिगदिग थैया लड़ेलड़े,
काज करक अछि बड़े बड़े।
लड़िते चललहुँ जैं सय डेग,
बढ़िते चल जायत ई वेग।
मा, मामा, बाबा, सब बोल,
सिखलहुँ, करइत छी अनघोल।
दौड़ि चलब नहि, लागत ठेस,
घूमू सबतरि देश-विदेश।
पहुँचब घर-घर गबइत गीत,
सब बनता अपनेसँ मीत।
चलू सम्हरि, ठोकू कसिताल,
काज पड़ल अछि टालक टाल।
मिथिला माता रखती तोख,
'बटुक' मोटाउ अहाँ भरिपोख।
'सुधा-धार सबतरि बरिसाउ,
काका लग दौड़ल चल आउ।

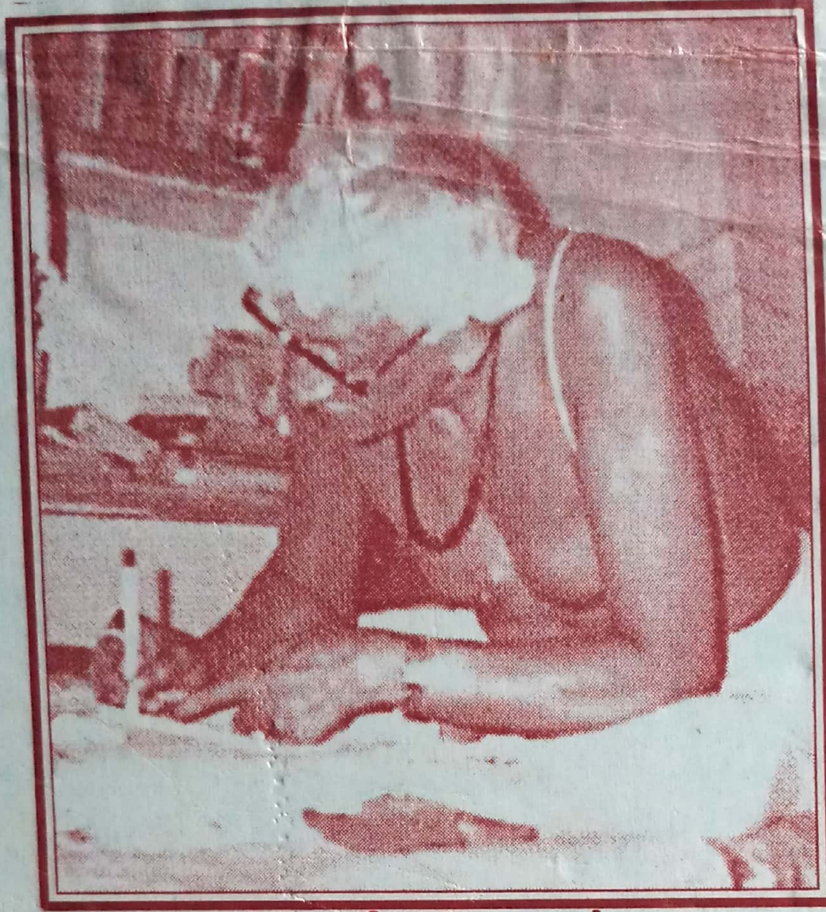
(बटुक, शतांक 1962)

वृक्ष-महिमा

पर.उपकारी एहन महान
गाछ-वृक्ष सन अछि नहि आन।
होइ अछि गाछो वृक्ष प्रबुद्ध,
करय वायु मण्डलकेँ शुद्ध।
हम सब छोड़ै छी जे श्वास,
से बनि जाइछ कार्बन खास।
तकरा गाछ ग्रहण कऽ लैछ,
बदलामे ऑक्सीजन दैछ।
सकल वनस्पति परम पवित्र
प्राणी मात्रक बड़का मित्र।
एकर प्रसादेँ होइअछि बरखा,
गृहस्थीक चलइत अछि चरखा।
डारि पात हो वा फल फूल
बिचला धड़ अथवा जड़ि मूल।
सब अँगेँ उपकार करैछ,
सभक रोग-सन्ताप हरैछ।
कटहर, बड़हर, आम, लताम,
जतय ततय रोपू भरि गाम।
घिया-पुता सबसँ लुटबाउ,
अपनहु लऽ इच्छा भरि खाउ।
बड़ पाकड़ि पीपर जे पाबी,
बाटक काते कात लगाबी।
बाट-बटोहीकेँ विश्राम,
अपना बैसल चारू धाम।
बाबा औ किछु गाछ लगाउ,
बैसल बैसल पुण्य कमाउ।



Scanned by CamScanner



पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

जन्म : 2 मई, 1925 ई. खोजपुर, मधुबनी

गद्य-पद्य, नाटक—एकांकी, उपन्यास-लघुकथा, व्यंग्य-विनोद, निबन्ध-आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण, साहित्य शतदलक प्रत्येक दलपर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटत।

बुझि पड़ैछ मैथिलीक नवीन काल खण्डमे कवीश्वर चन्द्रक प्रतिभा प्रसाद, अपन विद्वान पिता पण्डित मुक्तिनाथमिश्रजीक पुण्य-प्रभाव, शैशव-अभिभावक राजपण्डित बलदेवमिश्रक मुखर पाण्डित्य, गुरु पण्डित त्रिलोक नाथमिश्रक व्यंग्य-रंग, एवं अपन वरिष्ठ शिक्षक अभिभावक श्रीझिंगुरकुमर जीक कर्त्तव्यनिष्ठा-अनुशासनक समवेत ज्योति एहि नमछड़-छड़हर श्याम-अभिराम, प्रतिभा सनाथ चन्द्रनाथक अमर कलेवरमे अखण्ड रूपैं उद्योतित अछि।

बसन्त पञ्चमी
1975 ई०

आचार्य श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन'
मैथिली मन्दिर
राजकुमार गंज, दरभंगा